सप्तम् अध्याय

7.0 समकालीन हिन्दी (महिला) साहित्यकारों में सूर्यबाला का स्थान एवं साक्षात्कार :

आज़ादी मिलने से पहले महिला लेखन भावना-प्रधान था । उसमें घुटन, पीड़ा से बाहर आने के लिए महिलाएँ छटपटाहट करती थीं । उनके लेखन में उस काल की उनके मन की पीड़ा, त्रासदी और जीवन का यथार्थ था । परंतु आज़ादी के समय राष्ट्रीय आंदोलनों के कारण महिला भी अपने रुप में थोड़ा-थोड़ा बाहर आईं । सुभद्राकुमारी चौहान, महादेवी वर्मा, सरोजनी नायडू, उषादेवी और सुमित्रा सिन्हा आदि महिला साहित्यकारों का राष्ट्रीय आंदोलन से नाता था ।

महिलाओं को उस समय उनके शिक्षा, सत्ता, संपत्ति के हक, अधिकारों से दूर रखा जाता था । आज भारत की स्त्रियों को आज़ादी, अधिकार मिले हैं वे बीसवीं शताब्दी का उत्तरार्ध ही लेकर आया । स्त्रियों के प्रति इस बदलाव ने, स्त्री-चेतना ने महिलाओँ के जीवन में एक नई दिशा प्रदान की । आज महिलाओं को जो हक-अधिकार, स्वातंत्र्यता प्राप्त हुई है वह पूर्ववर्ती महिला आंदोलनकारियों, समाजसेवियों और चिंतकों के अथक प्रयासों का परिणाम है । समकालीन लेखिकाओं ने आज की जीवनशैली में नारी-जीवन के परिवर्तित मूल्यों को अत्यंत मार्मिक ढंग से चित्रित किया है ।

समकालीनता :

डॉ. रवीन्द्र ने समकालीन शब्द के तीन अर्थ बताये हैं "काल-विशेष से संबद्ध, व्यक्ति-विशेष के काल-यापन से सम्बद्ध और साहित्य, समाज अथवा प्रवृत्ति-विशेष से संश्लिष्ट काल-खण्ड।" काल-विशेष की दृष्टि से 'समकालीनता' का अर्थ हुआ 'एक व्यक्ति की संपूर्ण आयु का काल-खण्ड।' साहित्य में मूल्यांकन

के प्रसंग में समकालीनता का अर्थ किसी बी साहित्यकार के लेखन-काल में प्राप्त प्रवृत्तियों के परिप्रेक्ष्य के रुप में निर्धारित किया जा सकता है ।[1]

अंग्रेजी में 'समकालीन' शब्द के लिए 'कन्टेम्पोरेरी' (Contemporary) कोंटेम्पेरेरी शब्द प्रयुक्त है । डॉ. कामिल बुल्के ने इन दोनों शब्दों को समकालीनता के पर्याय के रुप में स्वीकारा है ।[2] 'द ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी वोल्यूम ।।।' में कन्टेम्पोरेरी अथवा समकालीन का अर्थ समान समय, युग या अवधि से संबंधित अर्थात् एक समय में साथ-साथ जीवन निर्वाह करते अस्तित्ववान होने या घटित होने से लगाया गया है ।[3]

समकालीन शब्द के अर्थ विवेचन के बाद इस शब्द के सामान्य अर्थ को ग्रहण करने का प्रयास रहेगा ।

7.1 समकालीनता की व्याख्या एवं परिभाषाः

समकालीन शब्द की अवधारणा विवाद का विषय है । इस शब्द को विभिन्न प्रकारों से व्याख्यायित करने का अथक प्रयास विद्वजनों ने किया है । कबी मूल्यों, कभी विशेष प्रवृत्तियों और कभी कालवाची अवधारणाओं से जोड़कर इस शब्द की व्याख्या और परिभाषा देने का प्रयास समय-समय पर होता आया है । समकालीन साहित्य की सही धारणा ग्रहण करने के लिए विभिन्न विद्वजनों की परिभाषाओं की व्याख्याओं पर दृष्टि डालना समीचीन होगा ।

"समकालीन साहित्य पर विचार करते समय आरंभ में ही मूलभूत प्रश्न यह उभरकर आता है कि समकालीन और आधुनिक के बीच क्या अंतर है ? या कि ये दोनों पद समानार्थक हैं? उत्तर में यही होगा कि 'समकालीन' पद सिर्फ कालबोधक है जबकि आधुनिक शब्द कालबोधक के साथ-साथ मूल्य बोधक भी है । समकालीन अपने शाब्दिक अर्थ- वक्ता या कि लेखक के समय का जीवन, समाज, साहित्य- जो भी अभिप्रेत हो। आधुनिक की व्याख्या अपेक्षित है । जहाँ

पहले अर्थ के अंतर्गत समकालीनता का बोध होता है, पर उसके आगे पद का विशिष्ट और निजी अर्थ होता है" स्पष्ट है कि प्रस्तुत अर्थ का संबंध मूल्यबोध से है।

समकालीनता आधुनिकता का विस्तार है । समकालीनता का अर्थ मात्र कालबोध नहीं है पर आधुनिकता एक साथ कालबोधक और मूल्यबोधक दोनों है। इस संबंध में डॉ. रामस्वरुप चतुर्वेदी लिखते हैं-

डॉ. रामकली सराफ के अनुसार - "आधुनिकता की तरह समकालीनता भी मूल्य-बोध से अभिन्न रुप से जुड़ी है । उनका विचार है - "अनिवार्यतः समकालीनता आधुनिकता की तरह ही मूल्यबोध से अभिन्न रुप से जुड़ी है । समकालिक रचनाशीलता वर्तमान के इतिहास-निरपेक्ष ढंग से न देखकर इतिहास-बोध से जोड़कर अर्थात् भविष्योन्मुख दृष्टि से देखती है ।"[4]

डॉ. जयप्रकाश शर्मा समकालीनता को एक काल-निरपेक्ष शब्द मानते हैं । उनके अनुसार समकालीनता होने का मतलब समयहीन होना भी है । वे लिखते हैं- 'समकालीनता' एक निरपेक्ष शब्द है । प्रत्येक युग का साहित्य अपने युग जीवन का साक्षी और समकालीन रहाग होगा । इसलिए समकालीन युग-संदर्भ की भावना नहीं हो सकती । समकालीनता का सामान्य अर्थ वर्तमान में अथवा गत दो-तीन दशकों से लें तो भी प्रश्न उठता है कि ऐसा कौन-सा परिवर्तन चक्र चला कि इस साहित्य को समकालीन की संज्ञा दे दी गई? वास्तव में समकालीन होना समयहीन होना भी है ।[5]

समकालीन लेखन का सीधा-सीधा संबंध आधुनिक काल के लेखन के साथ जुड़ा हुआ है । अर्थात् आज के आधुनिक युग की सम-विषम परिस्थितियों को जानना हो या बिना किसी पूर्वाग्रह के वर्तमान समय के सत्य को पूरी निष्ठा, ईमानदारी से किया गया चित्रण है । समकालीन होने का अर्थ यह भी है कि अपने समय के विरोध, वैचारिक भिन्नता, रचनात्मक दबाव को झेलते सभी परेशानियों, उलझनों एवं विसंगतियों के बीच अपनी रचना सृजनशीलता से स्पष्ट करना या प्रमाणित करना है ।

समकालीन महिला साहित्यकारों ने प्रमाणिक एवं वर्तमान परिस्थितियों का विश्लेषण किया है । समकालीन महिला साहित्यकारों में हम मन्नू भण्डारी, उषा प्रियंवदा, कृष्णा सोबती का नाम प्रसिद्ध महिला साहित्यकारों के अंतर्गत आता है। हमारे सामाजिक जीवन पर पश्चिम के साथ सांस्कृतिक आदान-प्रदान के कारण वहाँ के पश्चिमी साहित्यकारों का प्रभाव भी हमारे हिन्दी साहित्य पर बड़ा ।

इसके बाद हिन्दी महिला साहित्यकारों में अपनी लेखन कला के माध्यम से अनेक समकालीन महिलाओं ने अपना स्थान निश्चित किय है तथा हिंदी साहित्य को समृद्ध बनाने में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है जिसमें हम ममता कालिया, मृणाल पाण्डे, मृदुला गर्ग, सूर्यबाला, मंजुल भगत, चित्रा मुदगल, नमिता सिंह, राजी शेठ, नासिरा शर्मा, मैत्रेयी पुष्पा आदि को ले सकते हैं । ये सारी महिला साहित्यकार अभी भी साहित्यिक रचनाओं को प्रकाशित करने में कार्यरत हैं । इनमें केवल मंजुल भगत अब इस दुनिया में नहीं हैं ।

7.2 मन्नू भण्डारी :

मन्नू भंडारी का जन्म 3 अप्रैल 1931 को भानुपुरा नामक गाँव (मध्यप्रदेश) में मारवाड़ी परिवार में हुआ था । इन्होंने बनारस विश्वविद्यालय से एम.ए. की शिक्षा प्राप्त की थी । 'हंस' पत्रिका के संपादक श्री राजेन्द्र यादव से इनका विवाह हुआ था ।

मन्नू भण्डारी ने प्रत्येक समाज की सामाजिक समस्याओं पर अपनी लेखनी चलाई थी । इनके साहित्य में प्रमुख रुप से स्त्रियों की समस्याओं को उजागर किया है ।

उज्जैन में प्रेमचंद सृजनपीठ की कई वर्षों तक अध्यक्षा भी रहीं । लेखन कला उन्हें अपने पिता सुख सम्पतराय से विरासत में प्राप्त हुई थी ।

मन्नू भण्डारी की प्रमुख कहानियाँ- (1) मैं हार गई (1957), (2) एक प्लेट सैलाब (1962), (3)यही सच है (1966), (4) आँखो देखा झूठ (5) त्रिशंकु

मन्नू भण्डारी की प्रसिद्ध कहानी 'अकेली' है जिसमें सोना बुआ को प्रमुख पात्र के रुप में उभरा है। सोमा का चरित्र ऐसा होता है कि वह अपने आस-पास के सभी पड़ोसियों, लोगों से मिल-जुलकर रहती थी । परंतु इसके बावजूद भी वह 'अकेली' रह जाती है । उसके 'अकेली' रहने का कारण यह था कि उसे उसके पति ने त्याग दिया था । एक परित्यक्ता का जीवन व्यतीत करती थी और हमारे समाज में एक परित्यक्ता स्त्री का जीवन जीना कठिनाइयों, समस्याओं से घिरा होता है, और जब सोमा बुढ़ी हो जाती है तब उसका एकमात्र पुत्र भी उसे छोड़कर चला जाता है । वह अपने आस-पास के परिवेश में घुलना-मिलना चाहती है परंतु उसका यह प्रयास भी असफल ही रहता है ।[6]

मन्नू भण्डारी के प्रमुख उपन्यास :-

'महाभोज' (1979) : यह उपन्यास एक सामान्य वर्ग के आम आदमी से जुड़ा हुआ है जिसमें उसकी पीड़ा को उजागर किया गया गया है । इस उपन्यास का केन्द्र नौकरशाही और राजनीति में फैले भ्रष्टाचार से कैसे एक आम आदमी संघर्ष करता है यह दर्शाया है ।

'एक इंच मुस्कान' (1962) : यह उपन्यास आधुनिक युग के पढ़े-लिखे लोगों की दुःख देने वाली प्रेमकथा है । यह उपन्यास मन्नू भण्डारी ने अपने पति राजेन्द्र यादव के साथ लिखा है ।

'आपका बंटी' (1971) : यह एक दुःख, त्रासदी में संघर्ष कर रहे बंटी की व्यथा है जिसको केन्द्र में रखकर मन्नू भण्डारी ने यह उपन्यास लिखा है ।

नाटक :

'बिना दीवारों का घर' इनका प्रमुख नाटक है जो 1966 में प्रकाशित हुआ था और 'महाभोज' का नाटक में रुपांतरण ई.स. 1983 में किया गया ।

आत्मकथा :

'एक कहानी यह भी' 2007 में प्रकाशित, 'प्रौढशिक्षा के लिए:सवा सेर गेहूँ' (1993) में, जिसका उन्होंने प्रेमचन्द की कहानी का रुपान्तरण किया ।

फिल्म पटकथा : रजनीगंधा, निर्मला आदि ।

पुरस्कार : व्यास सम्मान (2008) में प्राप्त हुआ, दिल्ली का शिखर सम्मान, बिहार सरकार, भारतीय भाषा परिषद, उत्तरप्रदेश हिंदी संस्थान द्वारा पुरस्कृत किया जा चुका है ।

7.3 उषा प्रियंवदा :

उषा प्रियंवदा का जन्म उत्तर प्रदेश के कानपुर जिले में 24 सितंबर 1930 को हुआ था । उषा का जन्म भले ही कानपुर में हुआ था परंतु उनकी शिक्षा इलाहाबाद में ही पूर्ण हुई थी । उन्होंने अंग्रेजी साहित्य में इलाहाबाद विश्वविद्यालय से पीएच.डी. की उपाधि हासिल की थी । उषा का विवाह हार्वर्ड युनिवर्सिटी के प्रोफेसर किम से हुआ था । उषा की माताजी का नाम प्रियंवदा है जिसके चलते ही हमें उनके नाम के पीछे प्रियंवदा दृष्टिगत होता है । श्रीपल जी के प्रोत्साहन के कारण उन्होंने कहानी लिखना आरंभ किया था । वे हिन्दी साहित्य की सुप्रसिद्ध लेखिकाओं में से एक हैं । आजकल सेवानिवृत्त होकर लेखन और यात्राएं कर रही हैं ।

उषा प्रियंवदा के साहित्य में छठे एवं सातवें दशक के शहरी लोगों की पारिवारिक संवेदनाओं का चित्रण मार्मिक धरातल पर किया है ।

उषा प्रियंवदा के कहानी संग्रह-

- एक कोई दूसरा
- मेरी प्रिय कहानियाँ
- शून्य
- संपूर्ण कहानियाँ
- जिंदगी और गुलाब के फूल
- वनवास

आदि प्रमुख कहानी संग्रह और कहानियाँ हैं ।

उषा प्रियंवदा के उपन्यास-

- पचपन खंभे लाल दीवारें (1961 में प्रकाशित)
- रुकोगी नहीं राधिका (1967 में प्रकाशित)
- शेषयात्रा (1984 में प्रकाशित)
- अंतर्वशी (2000 में प्रकाशित)
- भया कबीर उदास (2007 में प्रकाशित)
- नदी (2013 में प्रकाशित)

पुरस्कार : पद्मभूषण, डॉ. मोटूरि सत्यनारायण पुरस्कार

7.4 कृष्णा सोबती :

कृष्णा सोती हिंदी के ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित प्रसिद्ध लेखिका हैं । कृष्णा सोती का जन्म 18 फरवरी 1925 में गुजरात में हुआ था जो अब पाकिस्तान में समाहित है और विभाजन के बाद वह दिल्ली में आकर निवास करने लगी थी । अपनी बाक कथात्मक शैली, अभिव्यक्ति, रचनात्मकता के लिए उन्हें सदैव याद किया जाता है । उन्होंने हिंदी कहानी साहित्य को विलक्षण भाषा शैली में प्रस्तुत किया । कहानियों के अतिरिक्त इन्होंने आख्यायिका (फिक्शन) की एक विशिष्ट शली में लंबी कहानियों का लेखन किया । इनका निधन 25 जनवरी 2019 में लंबी बिमारी के बाद एख निजी अस्पतला में हुआ।

कृष्णा सोबती कहानियाँ:

- बादलों के घेरे (1980 में प्रकाशित)

लंबी कहानियों में-

- डार से बिछुड़ी (ई.स. 1958 में प्रकाशित)
- मित्रो मरजानी (ई.स. 967 में प्रकाशित)
- यारों के यार (ई.स. 1968 में प्रकाशित)

- तीन पहाड़ (ई.स. 1968 में प्रकाशित)
- ऐ लड़की (ई.स. 1991 में प्रकाशित)

कृष्णा सोबती के उपन्यास-

- सूरजमुखी अंधेरे के -1972
- ज़िन्दगीनामा-1979
- दिलो दानिश-1993
- समय सरगम
- गुजरात पाकिस्तान से गुजरात हिन्दुस्तान-217 में (औपन्यासिक रचना)

विचार-संवाद-संस्मरण-

- सोबती एक सोहबत
- हम हशमत (तीन भागों में)
- शब्दों के आलोक में
- सोबती वैद संवाद
- मुक्तिबोध : एक व्यक्ति की सही तलाश में (2017)
- लेखक का जनतंत्र -2018
- मार्फ़त दिल्ली-2018

यात्रा-आख्यान:

बुद्ध का कमण्डल : लद्दाख

सम्मान एवं पुरस्कार : हिंदी अकादमी, दिल्ली की तरफ से, वर्ष 2000-2001 के शलाका सम्मान से पुरस्कृत, 2017 में 53वाँ ज्ञानपीठ पुरस्कार दिया गया ।

7.5 ममता कालियाः

हिंदी महिला साहित्यकारों में अपना एक विशिष्ट स्थान रखने वाली ममता कालिया का जन्म उत्तरप्रदेश में मथुरा, वृंदावन में 2 नवम्बर 1940 में हुआ था । ममता कालिया ने अपनी शिक्षा 1961 में विक्रम विश्वविद्यालय में बी.ए. की उपाधि

और एम.ए. की उपाधि दिल्ली विश्वविद्यालय से ई.स. 1963 में अंग्रेजी साहित्य में प्राप्त की थी । ममता कालिया का पारिवारिक परिवेश ही साहित्यिक था । "ममता कालिया अपने लेखन में मुंबई और मथुरा को प्रेरणास्त्रोत मानती हैं । इनकी प्रारंभिक कविताओं में इनका आक्रोश दृष्टिगत होता है । ममता कालिया साहित्य की सभी विधाओं में अपने लेखन का परिचय दे चुकी हैं । हिंदी कहानी के क्षेत्र में इनका स्थान सातवें दशक से अभी तक निरंतर रहा है ।"[7] ममता कालिया की 200 से अधिक कहानियाँ प्रकाशित हो चुकी हैं । वर्तमान में वह अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश् विद्यालय महात्मा गांधी में त्रिमासिक पत्रिका हिंदी की संपादिका के रुप में कार्यरत हैं ।

ममता कालिया की कहानियाँ:

ममता कालिया की कहानियाँ (दो खंडों में प्रकाशित) हैं । प्रथम खंड में 5 कहानी-संग्रहों की कहानियों का समावेश व द्वितीय खंड में चार कहानी-संग्रहों का समावेश किया गया है ।

कहानियाँ- 'छुटकार', 'एक अदद औरत', 'सीट नं. छः', 'उसका यौवन', 'जाँच अभी जारी है', 'प्रतिदिन मुखौटा', 'निर्मोही', 'पच्ची साल की लड़की', 'थिएटर रोड के कौए' आदि।

उपन्यास : बेघर-1971, नरक दर नरक-1975, प्रेमकहानी-1980, लड़कियाँ-1980, एक पत्नी के नोट्स-1997, दौड़-2000, अँधेरे का ताला-2009, दुक्खम-सुक्खम-2009 ।

कविता-संग्रह : नरक दर नरक, प्रेम कहानी, खॉटी घरेलु औरत, कितने प्रश्न करुँ।

नाटक संग्रह : आप न बदलेंगे, यहाँ रहना मना है ।

संस्मरण: कितने शहरों में कितनी बार

अनुवाद : सॉमरसेट मॉम का हिंदी अनुवाद (मानवता के बंधन)

संपादन : बीसवीं सदी का हिंदी महिला-लेखन, खंड 3

सम्मान-पुरस्कार :

ममता कालिया को अभिनव भारती, साहित्यभूषण सम्मान, यशपाल स्मृति सम्मान, महादेवी स्मृति पुरस्कार, कमलेश्वर स्मृति सम्मान, सावित्री बाई फूले स्मृति सम्मान और सबसे प्रतिष्ठित व्यास सम्मान 2017 में प्रदान किया गया है ।

7.6 मृणाल पाण्डेय:

मृणाल पाण्डेय एक लेखिका के साथ-साथ प्रसिद्ध पत्रकार एवं भारतीय टेलीविज़न का एक प्रसिद्ध व्यक्तित्व है । 21 वर्ष की आयु में ही उनकी प्रथम कहानी हिन्दी साप्ताहिक 'धर्मयुग' में प्रकाशित हुई थी । मृणाल पाण्डेय का जन्म मध्यप्रदेश के टीकमगढ़ में 26 फरवरी 1946 को हुआ था। उनकी माताजी शिवानी पन्त एक जानी-मानी उपन्यासकार, लेखिका थीं । इलाहाबाद विश्वविद्यालय से एम.ए. की उपाधि प्राप्त की तथा प्राचीन भारतीय इतिहास, पुरातत्त्व, शास्त्रीय संगीत, अंग्रेजी एवं संस्कृत साहित्य, ललित कला वॉशिंग्टन डी.सी. से पूर्ण की । मृणाल पाण्डेय हिन्दुस्तान टाइम्स के हिन्दी प्रकाशन समूह की सदस्या भी हैं । लोकसभा चैनल पर आनेवाले कार्यक्रम बातों-बातों में के साप्ताहिक साक्षात्कार कार्यक्रम का संचालन भी करती हैं । आज़ादी के बाद के समय बदलते भारतीय परिवेश को मृणाल पाण्डेय ने अपनी कहानियों, नाटक, उपन्यासों में प्रस्तुत किया है । मृणाल पाण्डेय अंग्रेजी में साधिकार लिखती हैं । 'इण्डियन थियेटर टुडे' इनकी इस संदर्भ की महत्वपूर्ण रचना है ।

कहानियाँ : यानी कि एक बात थी, बचुली चौकिदारिन की कढ़ी, चार दिन की जवानी तेरी, एक स्त्री की विदागीत (1983), एक नीच ट्रेजेडी (1981), सत्यबेधी (1980), दरम्यान (1977) आदि कहानियाँ हैं।

उपन्यास : अपनी गवाही, हमका दियो परदेस, पटरंगपूर पुराण, रास्तो पर भटकते हुए, देवी, सहेला रे (2018 में प्रकाशित)

आलोचना : बंद गलियों के विरुद्ध, स्त्री, लम्बा सफ़र, ओ उब्बीरी, ध्वनियों के आलोक में स्त्री, स्त्री देह की राजनीति से देह की राजनीति तक ।

आलेख : जहाँ औरतें गढ़ी जाती हैं

7.7 मृदुला गर्ग :

मृदुला गर्ग का जन्म कलकत्ता में 25 अक्टुबर 1938 में हुआ था । पिता के ट्रांसफर के बाद वह तीन वर्ष की उम्र में दिल्ली आ गई थीं । उनका बचपन काफी शारीरिक पीड़ा से गुजरा और इसके कारण वह कई वर्षों तक पाठशाला न जा सकीं । उन्होंने दिल्ली स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स से एम.ए. उत्तीर्ण किया । जानकी देवी कॉलेज में प्राध्यापिका के पद पर कार्यरत थीं । मृदुला गर्ग ने सामाजिक और आर्थिक शोषण के संबंध में गहरा अध्ययन किया था । उनको बचपन से ही साहित्य वाचन का शौक था । वे नाटकों तथा डिबेट में भी बढ़-चढ़कर सहभागी होती थी । उन्होंने कॉलेज काल में ही कई नाटकों में अभिनय किया है । उनके पिता श्री बी.पी. जैन और माता से विशेष लगाव था । उनका विवाह आनंद प्रकाश गर्ग से 1963 में हुआ था ।

मृदुला गर्ग ने अपना लेखन कार्य 1970 के दशक में प्रारंभ किया । अंग्रेजी उनके लिए उद्देश्यपरक भाषा थी । इस भाषा पर उनकी अच्छी पकड़ थी । परंतु बाद में उन्होंने सोचा कि भावनाप्रधान दृश्यों को वे हिंदी में ही अधिक प्रभावी रुप से लिख सकती हैं । जिसके कारण उन्होंने हिंदी में लेखन कार्य प्रारंभ कर दिया था । उन्होंने अपनी सृजनयात्रा का आरंभ कर्णाटक के बागलकोट से शुरु किया था ।

मृदुला गर्ग की कहानियाँ : कितनी कैद, टुकड़ा-टुकड़ा आदमी, डैफाडिल ज रहे हैं, ग्लैशियर, शहर के नाम, उर्फ सैन, समागम चर्चित कहानियाँ, संगति-विसंगति (दो खंडों में विभाजित संपूर्ण कहानी)।

उपन्यास : उसके हिस्से की धूप, वंशज, चितकोबरा, मैं और मैं, अनित्य, कठगुलाब, मिलजूल मन।

नाटक : एक और अजनबी, जादू का कालीन, तीन कैदें

निबंध : रंग-ढंग, चुकते नहीं सवाल

पुरस्कार : 1988-89 में हिंदी अकादमी का साहित्यकार सम्मान, कितनी कैद कहानी को कहानी पत्रिका द्वारा 1972 में सर्वश्रेष्ठ कहानी का पुरस्कार प्राप्त हुआ। मध्यप्रदेश साहित्य परिषद से सेठ गोविंददास पुरस्कार 1993 में 'जादू का कालीन' बालनाटक के लिए प्रदान किया गया ।

7.8 चित्रा मुदगल :

चित्रा मुदगल आधुनिक कथा साहित्य की प्रसिद्ध सम्मानित लेखिका हैं । मुदगल का जन्म चेन्नई में 10 दिसंबर 1994 को हुआ था । चित्रा मुदगल ने अनेक समाज, समुदायों, विशेष रुप से दलित-शोषित लोगों के बीच पैठ कर कार्य किया। चित्रा मुदगल सामाजिक परिवर्तनों में आंदोलनों की निर्णायक भूमिका है ऐसा मानती थीं । चित्रा मुदगल के पिता का नाम ठाकुर प्रताप सिंह तथा माताजी का नाम विमलादेवी था । उन्होंने अपनी शिक्षा मुंबई विश्वविद्यालय से सोमैया कॉलेज से 1976 में पूरी की । कला के क्षेत्र में रुचि होने के कारण जे.जे. स्कूल ऑफ आर्ट में बेसिक पाठ्यक्रम भी पुरा किया । चित्रा मुदगल ने अवधनारायण मुदगल से अन्तर्जातीय विवाह किया था ।

चित्रा मुदगल को अपनी बाल्यावस्था में ही कुछ ऐसा परिवेश मिला जिसमें मान-मर्यादा, सम्मान, इज्जत, रुतबा आदि की बात तो होती थी मगर वहीं घर की औरतों के साथ जानवरों से भी बुरा सलूक किया जाता था। कदम-कदम पर

शोषण, दोहन, अपमान, इच्छाओं का गला दबाना, संतान के पालन-पोषण सभी में अंतर किया जाता था। वहीं उस वातावरण ने चित्रा जी में एक विद्रोही प्रवृत्ति को आग दी थी । इससे चित्रा जी में सामंतवादी मानसिकता, विचारों और कार्यों का प्रतिरोध करने की क्षमता विकसित होने लगी थी ।

चित्रा मुदगल की कहानियां:

- 'ज़हर ठस हुआ' 1980, अनन्य प्रकाशन
- 'लक्षागृह', वर्ष 1982 में, पराग प्रकाशन
- 'अपनी वापसी' कथा संकलन, 1983 में, संभावना प्रकाशन
- 'इस हमाम में', 1986, प्रात प्रकाशन
- 'ग्यारह लम् कहानियाँ', 1987, प्रभात प्रकाशन
- 'द हाइना एंड अदर स्टोरीज़', 988 में ओशन बुक्स
- 'मामला अभी आगे बढ़ेगा'', 1996 में, प्रभात प्रकाशन
- 'जिनावर' कहानी संग्रह, 1996, किताबघर प्रकाशित
- 'लपटें' कहानी संग्रह 2000-2004, केंचुल, भूख, बयान, आदि से अनादि, पेंटिग अकेली है- यह उनकी कहानियाँ हैं।

उपन्यास: एक ज़मीन अपनी-1990, एक ज़मीन अपनी दूसरा संस्करण 1999, एक ज़मीन अपनी तीसरा संस्करण 2002 और चौथा संस्करण 2009 में, 'आंवा' उपन्यास, 'द क्रुसेड', 'गिलिगडु' 2002 में।

बाल उपन्यास : 'मधिमेखलै' 2001, 'जीवक' 2001, माधवी कन्नगी ।

बाल कहानी संग्रह : जंगल राज, देश-विदेश की लोककथाएँ, नीतिकथाएँ, पेड पर खरगोश, सुझ-बुझ, दूर के ढोल, काँच की किरच ।

आलेख संग्रह : तहखानों में बंद आईनों के अक्स, विचार संग्रह, 1988, यार उनकी मुठ्ठी में-2004.

नाटक : पंच परमेश्वर, सदगति, बुढ़ी काकी तथा अन्य नाटक वर्ष 2005 में।

पुरस्कार सम्मान : व्यास सम्मान (आंवा उपन्यास के लिए), राष्ट्रीय एकता एवं सदभावना के लिए प्रत्रा सम्मान, हिंदी अकादमी दिल्ली का साहित्यिक कृत सम्मान, मध्यप्रदेश का चक्रधर सम्मान, वीरसिंह जूदेव प्रतिष्ठित पुरस्कार, वाग्मणि सम्मान, अंतरराष्ट्रीय इंदु शर्मा कथा सम्मान लंदन, हिंदी अकादमी का बाल साहित्य पुरस्कार, चिन्मय भारती स्मान आदि सम्मान उन्हें प्राप्त हुए हैं ।

7.9 मैत्रेयी पुष्पा:

मैत्रेयी पुष्पा का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ में 30 नवंबर 1944 को हुआ था । उनके जीवन का शुरुआती दौर बुंदेलखण्ड में बीता था । उनकी शिक्षा झाँसी जिले के खिल्ली गाँव में हुई । हिंदी साहित्य में उन्होंने एम.ए. किया था । उनका जन्म गरीब किसान ब्राह्मण के घर हुआ था । मैत्रेयी पुष्पा के पिता हीरालाल पांडेय और माता कस्तूरी थीं । मैत्रेयी पुष्पा को साहित्य के प्रति लगाव चपन से ही था। तीसरी कक्षा से ही उन्होंने कविता पठन प्रारंभ कर दिया था । छोटी उम्र में ही पत्र लेखन करने लग गई थीं । मैत्रेयी जी ने विवाह के बाद ही साहित्य लेखन प्रारंभ किया । उनका प्रथम काव्य संग्रह 'लकीरें' था ।

मैत्रेयी जी को एक लेखिका के स्वरुप में नाम करने में राजेंद्र यादव ने मदद की थी । 'बाड़े की औरतों के लिए' कविता में उन्होंने निम्न वर्ग की महिलाओं के प्रति हीन भावना को और उच्च वर्ग के द्वारा अपने स्वार्थ के लिए इस्तेमाल करने की परंपरा का पर्दाफास किया था । कविता अखबार में छपने के बाद उनके मकान मालिक ने उन्हें घर से बाहर निकाल दिया था । 'स्मृति दंश' उपन्यास 1990 के माध्यम से मैत्रेयी पुष्पा ने साहित्य जगत में अपना प्रारंभ किया।

मैत्रेयी पुष्पा की कहानियाँ : 'चिहनार', 'ललमनियाँ', 'गोमा हँससी है', 'दस प्रतिनिधि कहानियाँ' ।

मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास : 'स्मृति दंश', 'बेतवा बहती रही', 'इदन्नमम', 'चाक', 'झूला नट', 'आल्मा कबूतरी', 'अगनपाखी', 'विज़न', 'कस्तूरी कुण्डल सै', 'वही ईसुरीफग' ।

नारी विमर्श : 'खुली खिड़कियाँ', 'सुनो मालिक नारी विमर्श सुनो', 'फाइटर की डायरी'

आत्मकथा : गुड़िया भीतर गुड़िया

नाटक : मंदाक्रांता

मैत्रेयी पुष्पा ने अपने साहित्य में बड़े बेबाक रुप से भ्रष्ट, पुरुषप्रधान और अश्लील समाज को उजागर किया है । खास करके नारी जीवन की समस्याएँ उनके साहित्य में केन्द्र स्थान पर रही हैं और इसी लेखन कला को पुरस्कारों से सम्मानित भी किया गया है ।

पुरस्कार : हिन्दी अकादमी द्वारा साहित्य कृति सम्मान, कथा पुरस्कार (फैसला) कहानी के लिए, नंजनागुड्डु तिरुमालंब पुरस्कार 1996, मध्यप्रदेश साहित्य परिषद द्वारा वीरसिंह जूदेव पुरस्कार, सरोजनी नायडु सम्मान, उत्तर प्रदेश प्रेमचंद सम्मान 1995 में 'बेतवा बहती रही' के लिए ।

7.10 नासिरा शर्मा :

नासिरा शर्मा का जन्म 22 अगस्त 1948 को इलाहाबाद में हुआ था। नासिरा शर्मा ने फारसी भाषा में एम.ए. की पढ़ाई की थी तथा हिंदी, उर्दू, अंग्रेजी भाषाओं में भी उनको रुचि थी । उनके पिता उर्दू के प्रोफेसर होने के साथ-साथ श्रेष्ठ कवि भी थे अतः यह हम कह सकते हैं कि साहित्य का प्रभाव उन पर बचपन से ही पड़ा था । पत्रकारिता के क्षेत्र में नासिरा शर्मा अपना एक विशिष्ट स्थान रखती हैं । उनका ववाह डॉ. रामचंद्र शर्माजी से हुआ था । स्त्री विमर्श की दृष्टि से नासिरा की कहानियाँ अत्यधिक महत्त्वपूर्ण हैं । नासिरा शर्मा की कहानियाँ तथा उपन्यासों की पृष्ठभूमि ईरान की हैं । नासिरा शर्मा स्वयं को स्त्रीवादी नहीं मानतीं।

लेखिका ने अपनी लगातार वर्गीय पक्षधरता बनाने के लिए मध्यमवर्गीय स्त्रियों को अपने लेखन का हिस्सा बनाया है । नासिरा शर्मा ने निम्न वर्ग एवं कामकाजी महिलाओं को ध्यान में रखते हुए उनकी समस्याओं का अपने साहित्य के माध्यम से विरोध किया है ।

प्रकाशित कृतियाँ : अब तक नासिरा शर्मा के दस उपन्यास और छः कहानी संकलन प्रकाशित हो चुके हैं । तीन लेख संकलन 'सारिका', पुनश्च का ईरानी क्रांति विशेषांक सात पुस्तकों का फारसी अनुवाद किया है । राजस्थानी लेखकों की कहानियों का संपादन किया है । रिपोर्ताज़ में 'जहाँ के फव्वारे लहराते हैं' प्रकाति

उपन्यास:

- सात नदियाँ एस समन्दर 1984
- ठीकरे की मँगनी 1989
- श्ल्मली 1987
- अक्षय वट 2003
- जिन्दा मुहावरे 1993
- परिजात 2011
- अजनबी, जज़ीरा 2012
- कागज़ की नाव 2014 में प्रकाशित हैं ।

पुरस्कार : 2008 यू.के. कथा सम्मान से सम्मानित, डॉ. राही मासूम रज़ा साहित्य सम्मान (2014), साहित्य अकादमी पुरस्कार (2016), व्यास सम्मान 'कागज़ की नाव' के लिए 2019 में प्राप्त किया ।

7.11 प्रभा खेतानः

प्रभा खेतान का जन्म 1942 में हुआ था । प्रभा खेतान के साहित्य में स्त्री की यंत्रणा को हम भलीभाँति देख सकते हैं। बंगाली स्त्रियों के माध्यम से उन्होंने

स्त्री के जीवन को काफी अच्छे तरीके से उजागर किया है । कोलकाता विश्वविद्यालय से दर्शनशास्त्र में स्नातक की उपाधि ली और "ज्यॉ पॉल सार्त्र के अस्तित्ववाद" पर प्रभा खेतान ने पीएच.डी. की थी । उन्होंने अपने बचपन में 12 वर्ष की आयु में ही साहित्य लेखन की यात्रा प्रारंभ कर दी थी । उनके द्वारा रचित रचना 'सुप्रभात' में प्रकाशित हुई थी । तब वे केवल सातवीं कक्षा में अभ्यास करती थीं । प्रभा खेतान फाउन्डेशन की संस्थापक अध्यक्षा थीं। प्रभा खेतान नारी विषयक कार्यों में हमेशा सक्रिय रहती थीं । वे हिंदी भाषा की प्रतिष्ठित उपन्यासकार, कवयित्री तथा नारीवादी चिंतक तथा एक समाज सेविका के रुप में भी कार्य करती थीं ।

प्रभा खेतान की मुख्य रचनाएँ : कविता संग्रह- 'अपरिचित उजले', 'सीढ़ियाँ चढ़ती हूँ मैं'।

उपन्यास : 'आओ पेपे घर चलें', 'तालाबंदी', 'एड्स', 'छिन्नमस्ता' (1996), 'अपने अपने चेहरे' (1994), 'पीली आँधी' (1996)

आइए, अब हम देखते हैं समकालीन महिला साहित्यकारों में सूर्यबाला क्यों अपना एक महत्त्वपूर्ण स्थान रखती हैं ।

7.12 समकालीन साहित्यकारों में सूर्यबाला :

हिन्दी साहित्य में सूर्यबाला ने अपना एक विशिष्ट और महत्त्वपूर्ण स्थान बनाया है । सूर्यबाला ने हिन्दी की कई विधाओं में साहित्य की रचना की है जिसमें उन्होंने उपन्यास, कहानियाँ, व्यंग्य साहित्य और बाल साहित्य जैसी विधाओं पर भी हाथ आझमाया है । व्यंग्य-साहित्य में पदार्पण करने वाली सूर्यबाला एकमात्र महिला साहित्यकार हैं जो उन्हें सभी महिला साहित्यकारों में अपनी एक अलग छवि बनाने में सहायक है । न केवल व्यंग्य बल्कि बाल-साहित्य में भी सूर्यबाला ने अपने आप को आजमाया है । सभी महिला साहित्यकारों में सूर्यबाला ने अपना एक महत्वपूर्ण स्थान निर्मित किया है जिससे वे सभी महिला साहित्यकारों में भिन्न

नज़र आती हैं । अपने व्यंग्य, उपन्यासों और कहानियों में उन्होंने समाज की रुढ़ी परंपराओ, कुप्रथाओं, अंधविश्वास, भ्रष्टाचार, समाज में महिलाओं की दयनी स्थिति, शिक्षा का स्तर, बच्चों की समस्या, आधुनिक समय के मनुष्य की मानसिक स्थिति आदि समस्याओं का अपनी साहित्यिक रचनाओं में उल्लेख किया है और अपनी धारदार लेखनी से उनका विरोध प्रकट किया है । उनकी लेखनी इन्द्रधनुष के सात रंगों जैसी है जिसमें साहित्य की सभी विधाओं के रंग दिखाई देते हैं । एक तरफ तो वह एक संवेदनशील मुद्दे को उठाते हुए दृष्टिगत होती हैं तो दूसरी ओर व्यंग्य के माध्यम से पाठक के मन पर एक गहरी चोट करते हुए हास्य निर्माण करती हैं । सूर्यबाला को बचपन से ही साहित्य के प्रति रुचि थी । उनका लालन, पालन-पोषण बड़े लाड़-दुलार, शिष्टाचार-अनुशासन के साथ हुआ था । उनका बचपन ही उन्हें आज तक सही रास्ता दिखाता है ऐसा सूर्यबाला का मानना है । सूर्यबाला एक मध्यमवर्गीय परिवार से आती हैं फिर भी उनके परिवार में पिता शिक्षा अधिकारी थे जिनके कारण उन्हें घर में हमेशा स्वीकृति के लिए नये-नये पाठ्यक्रमों की किताबें मिल जाती थीं ।

समकालीन लेखन में महिला साहित्यकारों ने नारी की अस्मिता, स्वतंत्रता अस्तित्व को पूरजोर में चित्रित किया है । आज की महिला साहित्यकारों ने सदियों से चली आ रही पुरुषप्रधान साहित्य विधाओं में अपने कदम धीरे-धीरे मजबूत बना लिए हैं । इसमें साठोत्तरी महिला साहित्यकारों में सूर्यबाला ने अपना एख विशेष स्थान स्वयं बनाया है । उन्होंने अपनी रचनाओं में विशेष रुप से नारी की मानसिक, सामाजिक, पारिवारिक संवेदनाओं को बड़े ही मार्मिक स्वरुप में प्रस्तुत किया है ।

मन्नु भंडारी, उषा प्रियंवदा, मृदुला गर्ग, कृष्णा सोबती आदि महिला साहित्यकारों के बात साहित्य के क्षेत्र में सूर्यबाला का नाम बड़े आदर के साथ लिया जाता है । समकालीन महिला साहित्यकारों में सूर्यबाला का स्थान बताने के लिए उनके जन्म, शिक्षा, पारिवारिक जीवन, उनकी रचनाओं, उनको मिले सम्मान

(पुरस्कार) आदि पर थोड़ी नज़र करेंगे । वैसे तो मैं अपने प्रथम अध्याय में सूर्यबाला के व्यक्तित्व एवं कृतित्व में इसकी चर्चा कर चुकी हूँ परंतु समकाली महिला साहित्यकारों में उनका स्थान बताने के लिए उनके जीवन-संबंधी यह जानकारी देना आवश्यक है तभी उनके लेखन की विशेषता, स्थान, महत्व अच्छे से बता सकते हैं और यह आवश्यक भी है ।

7.12.1 सूर्यबाला का व्यक्तित्व:

हिन्दी साहित्य की दुनिया में अपनी संवेदनशील, मार्मिक, नारी-चेनता, मानसिक संवेदनाओं पर प्रकाश डालने वाली और हिन्दी साहित्य जगत में अपना एक महत्वपूर्ण स्थान बनाकर अमिट छाप छोड़नेवाली लेखइका सूर्यबाला का जन्म उत्तर प्रदेश के वाराणसी में 25 अक्टुबर 1943 को हुआ था । सूर्यबाला को बचपन से ही कला, संगीत, पढ़ने-लिखने में बहुत रुचि थी उसके साथ साहित्य में भी उनकी रुचि बढ़ने लगी थी ।

7.12.2 सूर्यबाला का पारिवारिक जीवन:

सूर्यबाला का पूरा नाम सूर्यबाला वीरप्रताप श्रीवास्तव था । उनकी माँ का नाम श्रीमती केसरकुमारी था । शिक्षा-विभाग में सूर्यबाला के पिता एक उच्च पदाधिकारी थे जिसके चलते उनके घर में हमेशा विभिन्न कक्षाओं की पाठ्यपुस्तकें उनके पिता के पास स्वीकृत होने के लिए आया करती थीं । इन्हीं पुस्तकों के कारण सूर्यबाला का लगाव वाचन के प्रति बढ़ने लगा था । सूर्यबाला के कपाटों में अच्छी-खासी पुस्तकों का संग्रह था जिसमें चंद्रकांता, संतति, उर्दू की रामायण, सुदामा चरित्र, स्त्री सुबोधइनी, सेक्सपीयर, मिल्टन आदि की किताबें थी। उनके माता-पिता दोनों पढ़े-लिखे होने के कारण घर का माहौल पहले से ही शिक्षा के प्रति लगाव रखने वाला था । उनके पिता को शेरो-शायरी में भी रुचि थी और वे अपने शौक के लिए कभी-कभी शायरी भी कर लेते थे और तरन्नुमें गाकर

मित्रों को भी सुना दिया करते थे । उनकी माता एक मध्यमवर्गीय संस्कारों वाली, शिक्षित महिला थीं जिसके कारण सूर्यबाला पर बचपन से ही अपनी माता-पिता के संस्कारों वाली छाप आज भी दृष्टिगत होती है । उनके पिता का अचानक देहांत होने के कारण उनके पूरे परिवार की जिम्मेदारी उनकी माता के कंधों पर आ पड़ी थी । उनके परिवार में उनकी बहनें वीरबाला, केशरबाला, चंद्रबाला और भाई विष्णुप्रताप था जिनकी सारी जिम्मेदारियाँ उनकी माता ने बड़ी ही नाजुक परिस्थितियों से लड़ते-लड़ते निभाई थीं । और आज उनके इन्हीं संस्कारों, शिक्षा-दीक्षा का परिणाम है कि सूर्यबाला जैसी सशक्त महिला साहित्यकारा हिंदी साहित्य को प्राप्त हुई । उनके प्रेरणास्त्रोत में कहीं-न-कहीं उनकी माता का बहुत ही महत्त्वपूर्ण स्थान है जो सूरय्बाला की लेखन शैली में आज भी हम देख सकते हैं। पिता की मृत्यु के पश्चात भी उनकी माता ने कभी भी अपनी अवस्था को देखकर दयनीयता का प्रदर्शन समाज के सामने नहीं किया बल्कि निर्भिक होकर सारी परिस्थितियों पर विजय प्राप्त की । उनकी माता तो ठीक, परंतु उनकी मौसी जो कि एक परित्यक्ता थीं, उनका जीवन भी सूर्यबाला के लिए प्रेरणादायी रहा । विपरीत परिस्थितियों, विसंगतियों का कैसे डटकर सामना करते हैं यह सूर्यबाला ने लगता है बचपन में ही अपनी माँ से सिख लिया था ।

7.12.3 शिक्षा : सूर्यबाला के पिता एक सरकारी कर्मचारी थे जिसके चलते हर आठ से दस महिनों में उनका ट्रांसफर हो जाता था । इस कारण उनके पिता ने पाँचवी कक्षा तक सूर्यबाला को पाठशाला नहीं भेजा था । उन्होंने एम.ए. की पढ़ाई की तथा काशी विश्वविद्यालय से 'रीति साहित्य' मे डॉ. बच्चनसिंह के मार्गदर्शन में पीएच.डी. की उपाधि प्राप्त की ।

वैवाहिक जीवन :

सूर्यबाला का विवाह एक सुसंस्कृत एवं उच्च शिक्षित श्री आर.के. लाल के साथ हुआ था । वे मर्चंट नेवी में चीफ इंजीनियर के पद पर कार्यरत थे लेकिन उन्होंने बाद में नौकरी छोड़ दी । वर्तमान मे वे सेवानिवृत्त हैं ।

7.12.4 सूर्यबाला के लिए साहित्य प्रेरणास्त्रोत :

सूर्यबाला के पिता एक उच्च शिक्षाधिकारी थे जिसके चलते उनके घर में हमेशा किताबों का ढेर लगा रहता था । दूसरा उन्होंने अपनी बड़ी बहनों की किताबों में से अनेक कहानियों का पठन किया था जिसमें प्रेमचंद द्वारा रचित 'ईदगाह' और 'रक्षाबंधन', 'आकाशदीप', 'प्रायश्चित', 'साइकिल की सवारी', 'अकबरी लोटा', 'मुगलों ने सल्तनत बख्श दी' और अपनी बड़ी बहनों से कहानियों को सुना भी था जिसके कारण इन कहानियों का गहरा प्रभाव उनके मानसपटल पर पड़ा । इन कहानियों को सूर्यबाला कई बार पढ़ चुकी थीं । इन कहानियों में स्थित सारी संवेदनाओं को उन्होंने अपने बचपन में ही समझ लिया था । सूर्यबाला ने अपने साहित्यिक जीवन का आरंभ कविता से प्रारंभ किया था । उनके द्वारा रचित प्रथम कविता उन्होंने आठवीं-नौंवी क7 में लिखी थी जिसका नाम था 'बाँसुरी' । उनकी कई कविताओं और साहित्यिक लेख आज भी प्रकाशित होते रहते हैं । उनकी प्रथम कहानी 'जीजी' 1972 में 'सारिका' पत्रिका में प्रकाशित हुई थी । 1973 में उनकी प्रथम व्यंग्य रचना 'काना ईंटा आना समाजवाद का' और दूसरी धर्मयुग में प्रकाशित 'अविभाज्य' थी ।

सूर्यबाला की कई रचनाओं का अंग्रेजी, पंजाबी, मराठी, बांग्ला, उर्दू, गुजराती भाषाओं में अनुवाद हुआ है । इनकी विधाओं का आकाशवाणी तता दूरदर्शन पर प्रस्तुतिकरण हो चुका है। उनकी व्यंग्य रचनाओं में 'सोकरनामा', 'पूर्व जन्मों का लेखा-जोखा' की दूरदर्शन पर प्रस्तुति हुई है । नेहरु सेंटर में (लंदन) वंग्य रचनाओं का पठन किया है । 'सज़ायाफ्ता' का चयन इंडियन क्लासिक श्रृंखला के अंतर्गत दूरदर्शन पर हुआ था ।

पुरस्कार : सूर्यबाला को अपने साहित्यिक योगदान के लिए कई पुरस्कार और सम्मान से नवाज़ा जा चुका है जिसमें 'घनश्यामदास सराक पुरस्कार', 'प्रियदर्शिनी पुरस्कार,' 'कमलादेवी गोइनका वाग्देवी पुरस्कार', व्यंग्यश्री सम्मान आदि उल्लेखनीय हैं । इसके पश्चात् नागरी प्रचारिणी सभा, दक्षिण भारत हिंदी प्रचार

सभा, मुंबई विश्वविद्यालय, आरोही संध्या, अखिल भारतीय कायस्थ महासभा, सातपुड़ा संस्कृति परिषद आदि संस्थाओं ने उन्हें सम्मानित किया है ।

उनकी कहानियाँ महाराष्ट्र के समाचार-पत्र 'लोकमत' में तथा वागर्थ, वर्तमान साहित्य, ज्ञानोदय, धर्मयुग में प्रकाशित हो चुकी हैं जो अपने आप में सम्मान एवं गौरव की बात है ।

7.12.5 सूर्यबाला द्वारा रचित रचनाएँ :

'मेरे संधिपत्र', 'सुबह के इंतजार तक', 'यामिनी कथा', 'दीक्षांत', 'अग्निपंखी' आदि उपन्यास हैं । कानियों में 'एक इंद्रधनुष जुबैदा के नाम', 'दिशाहीन', 'थाली भर चाँद', 'मुँडेर पर', 'गृह प्रवेश', 'कात्यायनी संवाद', 'साँझवती', 'पाँच लंबी कहानियाँ' आदि कहानी-संग्रहों का प्रकाशन हुआ है । व्यंग्य रचनाओं में 'अजगर करे न चाकरी', 'धृतराष्ट्र टाइम्स', 'देश सेवा के अखाड़े में' संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं ।

सूर्यबाला ने अपनी विशिष्ट लेखन कला के माध्यम से समकालीन कहानी साहित्य को और सशक्त और यथार्थ बनाया है । उन्होंने अपनी कहानियों और उपन्यासों के माध्यम से महानगरीय जीवनशैली, नौकरी करने वाली महिलाएँ, पति-पत्नी के आपसी संबंध, ग्रामीण समस्याएँ, रोजगार की समस्या, शिक्षा की समस्या, सूखे की समस्या, वृद्धों की समस्या, बृहद् नगरों में मकान की समस्या, रुढ़ीवादी परंपरा की समस्या, गरीबी की समस्या, बाल मजदूरी की समस्या, मानव मन की समस्या, मानसिक समस्याएँ, बाढ़ की समस्या, बलात्कार की समस्या, बच्चों के बालमन की समस्या, दंगों की समस्या, राजनीतिक समस्या, शिक्षा के क्षेत्र में समस्या, सांप्रदायिक समस्या आदि कई समस्याओं पर अपनी साहित्यिक रचनाओं के माध्यम से प्रहार किया है और अपने सशक्त लेखन कौशल के माध्यम से उसका विरोध भी प्रकट किया है । उनके उपन्यास, कहानियाँ, व्यंग्यों का यथार्थ रुप में अनोखे अंदाज में प्रस्तुतिकरण लाजवाब है ।

सूर्यबाला द्वारा रचित कहानियाँ, कहानी के तत्वों के आधार पर पूरी तरह खरी उतरती हैं । सूर्यबाला ने अपनी कहानियों में आधुनिक युग की सारी समस्याओं, तत्यों को पूरी निपुणता से पेश किया है । जैसे 'कंगाल' कहानी में एक युवक पढ़ा-लिखा होकर भी उसको नौकरी प्राप्त करने में समस्या उत्पन्न होती है . इस कहानी में सूर्यबाला ने एक शिक्षित युवक में बेरोजगारी के कारण उसके मन में जो व्यथा है उसे यथार्थ रुप से प्रकट किया है । 'गुफ्तगू' कहानी में खोखले रिश्तों और जीवन के खालीपन को दिखाया है कि कैसे मनुष्य स्वार्थ की प्रवृत्ति में सभी उपकारों को भूला देता है । । 'मेरा विद्रोह' कहानी में सूर्यबाला ने मध्यमवर्ग की आर्थिक परिस्थिति का चित्रण किया है । इस कहानी में पिता-पुत्र के बीच एख विद्रोह की भावना परंतु बाद में बच्चों की मानसिकता में परिवर्तन की भावना जागृत करना । सूर्यबाला की कहानी 'सुमितरा की बेटियाँ' में एक स्त्री की मानसिक त्रासदी, उसकी पीड़ा, उसके शोषण का यथार्थ चित्रण किया है । 'विजेता' कहानी के माध्यम से एक नौकर की ईमानदारी का चित्रण किया है वहीं शोषक रुप में शेठ को तथा उसके स्वार्थी भाव को प्रकट किया है । 'दिशाहीन' कहानी में गाँव के भोलेभाले युवक का चित्रण है जो शहर की चकाचौंध से अपने आपको जोड़ नहीं पाता । 'थाली भर चाँद' कहानी संग्रह में ज्यादातर कहानियाँ पारिवारिक समस्याओं को लेकर लिखी गई हैं । इसमें रेल्वे के टी.सी. के द्वारा भोले-भाले, अशिक्षित यात्री का शोषण, ऑफिस में प्रमोशन प्राप्त करना, वृद्धों की उपेक्षा, अपमान करना, चमचागीरी करना आदि को चित्रित किया है । 'शहर की सबसे दर्दनाक खबर' में सांप्रदायिक दंगों का तथा मानव का मानव के प्रति प्रेम का चाहे वह किसी भी धर्म का हो, उसमें मानवता का गुण अवश्य होता है, यह इस कहानी के माध्यम से बताया है ।

'मानुष गंध' में एक योग्यता प्राप्त डॉक्टर की उपलब्धियों और उसका मूल्यांकन बताया गया है। सूर्यबाला की कहानियाँ पढ़कर पाठक कहानियों को अपने आपसे जोड़कर देखने लगता है । क्योंकि सूर्यबाला ने इन कहानियों में

आधुनिक जीवन की सभी समस्याओं को अपनी कहानियों में समावेश करते हुए पाठक के मन से उसे जोड़ दिया है ।

सूर्यबाला के उपन्यास साहित्य में अग्निपंखी में दो लघु उपन्यासों का समावेश है । एक 'अग्निपंखी' और दूसरा 'सुबह के इंतजार तक' । 'अग्निपंखी' में हमारे भारत के गाँवों की अभिशप्त पीढ़ी की कथा है जो अपने वास्तविक स्वरुप को खो चुकी है । इस उपन्यास में सूर्यबाला ने जयशंकर के पात्र के द्वारा उसकी जीवन-यात्रा के माध्यम से गाँव से लेकर शहर तक की सभी समस्याओं का समावेश सूर्यबाला ने अपनी लेखन कला के माध्यम से प्रस्तुत किया है जिसमें उपन्यास के सभी तत्वों का पूर्णतः ध्यान रखा गया है जिसमें जयसंकर की माँ की मानसिक स्थिति अत्यंत दयनीय हो जाती है । इसे बड़े मार्मिक एवं भावुक रुप से लेखिका ने प्रस्तुत किया है ।

दूसरा उपन्यास है 'सुबह के इंतजार तक'। इसमें सूर्यबाला ने एक ऐसी युवती का चित्रण किया है जो अत्यंत गरीब होते हुए भी उसके साथ जो बलात्कार की घटना घटित होती है उन सबसे उभरकर समाज से लड़कर अपने भाई को इस मकाम तक पहुचाती है कि वह आखिर में पढ़-लिख कर डॉक्टर बन जाता है । इस उपन्यास के माध्यम से सूर्यबाला ने समाज में एक नारी की वेदना, पीड़ा को दर्शाया है और सारी पीड़ादायक परिस्थितियों का सामना करने के बाद भी अंत में एक सशक्त नारी के रुप में अपने आपको कैसे स्थापित किया जाता है इस पूरी यात्रा को 'सुबह के इंतजार तक' उपन्यास में सूर्यबाला ने बड़े ही प्रेरणात्मक ढंग से प्रस्तुत किया है ।

'यामिनीकथा' में सूर्यबाला ने एक संवेदनशील स्त्री की वेदना को प्रकट किया है । एक स्त्री के दुःख का कारण क्या होता है उसे अपने मन के अंदर क्या पीड़ा होती है तथा कैसे वह शारीरिक और मानसिक धरातल पर सारी समस्याओं से जूझती है इसका यथार्थ चित्रण सूर्यबाला ने 'यामिनीकथा' में किया है । एक स्त्री का प्रथम विवाह तथा प्रथम विवाह से उत्पन्न संतान तथा पुनर्विवाह के बाद पति

और दूसरी संतान के बीच कैसे यामिनी मानसिक रुप से अपने आपको असहज महसूस करती है उसका सरल और सहज रुप हमें देखने को मिलता है ।

'दीक्षांत' उपन्यास में शिक्षा जैसे व्यापक क्षेत्र में कैसे भ्रष्टाचार ने अपने पग पसारे हैं उसका चित्रण किया है । शर्मा सर क पढ़े-लिखे अध्यापक होने पर भी कैसे उन्हें अस्थायी होने के कारण कई समस्याओं का सामना करना पड़ता है उनकी पूरी जीवनयात्रा का वृत्तांत इस उपन्यास में सूर्यबाला ने प्रस्तुत किया है जो अत्यंत मार्मिक और भावनात्मक स्तर को बहुत आगे ले जाता है । 'दीक्षांत' उपन्यास में एक अध्यापक की अत्यंत दयनीय अवस्था का मार्मिक चित्रण किया है जो अंत तक परिस्थितियों से लड़ता रहता है परंतु आखिर में जीवन से हार मान लेता है ।

'मेरे संधिपत्र' में सूर्यबाला ने नायिका शिवा को केंद्रस्थान पर रखकर एक कम उपम्र की नाजुक, खिलखिलाती लड़की जिसमें बचपना भरा पड़ा था और अपने जीवन का पूरा आनंद लेती थी ऐसी लड़की का विवाह दहेज न होने के कारण उच्चवर्गीय समाज में कर दिया जाता है जिसमें वह एक द्वितीया माँ का फर्ज भी अदा करती है । परिवार में सबको खुश रकने के चक्कर में वप अहने सपनों, अपने अधिकारों, अपनी भावनाओं को भी परे रख देती ह और खुद की भी जरुरतों पर ध्यान नहीं देती बल्कि परिवार की सारी जिम्मेदारियाँ बखूबी निभाती है ।

सूर्यबाला ने अपने व्यंग्य साहित्य के माध्यम से समाज पर एक तंज कसा है तथा समाज में व्याप्त सभी समस्याओं का जिक्र अपनी व्यंग्य रचनाओं में किया है। सूर्यबाला हिन्दी साहित्य की एकमात्र व्यंग्य करने वाली महिला साहित्यकार हैं।

बाल साहित्य में उनकी रचना 'झगड़ा निपटाकर दफ्तर' में बच्चों के लिए मनोरंजक कहानियों का संग्रह है जिसमें कहानियों के माध्यम से बच्चों की समस्या, उनकी मनोदशा, खेल की भावना, बड़ों के प्रति उनके विचार तथा बाल

सहज प्रवृत्तियों का इन कहानियों में सूर्यबाला ने समावेश कया है । सूर्यबाला की इस कृति को देखकर - पढ़कर हम कह सकते हैं कि सूर्यबाला अच्छी तरह से बालमानस को समझती हैं तभी उन्होंने इतने मनोरंजक ढंग से इस बालकहानी संग्रह का लेखन किया जिसमें सूर्यबाला को सौ प्रतिशत सफलता प्राप्त हुई है ।

इस आधार पर हम कह सकते हैं कि सूर्यबाला ने अपनी सशक्त लेखन शैली के आदार पर समकालीन महिला साहित्यकारों में अपना एक विशिष्ट स्थान कायम किया है । सूर्यबाला के साहित्य को पढ़कर पाठक अपने स्वयं के व्यक्तित्व को ढूँढ़ता है । सूर्यबाला ने साहित्य में भावुकता, यथार्थ, संवेदनशीलता को जोड़कर अपने साहित्य का लेखन किया है जिससे साठोत्तरी (समकाली) महिला साहित्यकारों में सूर्यबाला ने अपना एक अलग मकाम हासिल किया है चाहे वह कहानी हो, उपन्यास हो, व्यंग्य हो, बाल साहित्य हो - सभी विधाओं में सूर्यबाला ने अपने आप को मजबूत ढंग से प्रस्तुत किया है।

आज की समकालीन महिला साहित्यकारों में सूर्यबाला का नाम एक सूर्य की भाँति साहित्य के क्षेत्र में हमेशा जगमगाता रहेगा ।

**

साक्षात्कार (सोशल मिडिया माध्यम)

1. 'यामिनी कथा' लिखने की प्रेरणा आपको कहाँ से मिली?

उ. प्रेरणा ऐसे ही अनायास मिल जाया करती है लेकिन 'यामिनी कथा' की प्रेरणा मुझे बिल्कुल बाकायदा प्रत्यक्ष मिली । मेरे पति के एक मित्र थे जिनकी कैंसर से मृत्यु हो चुकी थी तो हम एक बार उनके घर गए थे और जब तक वो धीरे-धीरे कैंसर से गुजरते रहे हमें बड़ा दुःख होता रहा, लेकिन बाद में हमने देखा कि उनकी पत्नी ने दूसरा विवाह किया, दूसरा विवाह किया तो उनका बेटा करीब दस या बारह साल का रहा होगा । एक बार मुझे याद है कि उनके घर गए थे और उन्होंने दूसरा विवाह भी कर लिया था लेकिन तब तक उस समय मेरे बच्चे और उनके बच्चे समकक्ष थे, हमउम्र थे और वो टेरेस पर खेल रहे थे । नीचे आने पर मेरे बड़े बच्चे ने बताया कि उनके बच्चे ने, जिसका नाम संजय था, उसने जाने किस बात पर खेल-खेल में एक बड़ी-सी काँच की ड्रींक की बॉटल तोड़ दी और ऐसे तोड़कर उसने मज़ा किया था। मैं बिल्कुल काँप गई कि काँच की बॉटल किसी दस-ग्यारह साल के बच्चे के द्वारा यूँ ही तोड़ दिया जाना.. उसके अंदर क्या होगा? क्या चल रहा होगा.. शायद सही सारी मनःस्थितियाँ थीं जिसने मुझे उसकी माँ की मनःस्थितियों की तरफ मोड़ दिया और बाद में देखा तो उसकी माँ को एक छोटा बच्चा भी हुआ था तो बराबर मन इसी में घुमड़ता रहा । यूँही यह सोचकर नहीं कि मुझे इस पर उपन्यास लिखना है, मन में एक बेचैयानी थी कि कैसा होगा उस स्त्री का जीवन, जिसके पास पहले पति का एक बड़ा बेटा हो और दूसरे पति से एक छोटा बच्चा हो और क्या संबंध होंगे उसके नये पति, पहले पति के बेटे और इस किशोर हो रहे बेटे से और उसके नये पैदा हुए भाई से और

कितनी तरह की भूमिकाएँ उसे निभानी पड़ती होंगी । बस ये मन में घुमता रहा और 'यामिनी कथा' लिख दी ।

2. विधवा विवाह एवं पुनर्विवाह के संदर्भ में आज आप समाज में क्या परिवर्तन देखते हैं?

उ. विधवा विवाह और पुनर्विवाह के लिए आज हमारे समाज में जो स्थितियाँ थीं उनमें ज़मीन आसमान का अंतर आ गया है । सबसे बड़ी बात ये कि हमारे समय में विधवायें दूर से ही पहचान में आ जाती थीं । सफ़ेद साड़ी, सुनी माँग, सुना माथा, सुनी कलाईयाँ देखकर भयानक-भयावह सी लगती थीं । उन्हें जो ईस्वर ने कष्ट दिया होता था लेकिन हम संसार वाले, परिवार वाले भी उन्हें सारे जो कुछ सुख दे शकते थे, उससे भी उन्हें विहीन कर देते थे । आज कहीं हमें समाज में ये पता भी नहीं चलेगा कि कौन विधवा है, कौन नहीं है और उसके बाद अब बड़ी तेजी से बड़े शहरों में विधवा विवाह भी लोग कर रहे हैं और जैसे बड़ी उम्र के वरिष्ठ नागरिकों में उनके बच्चे उनके विवाह के लिए सोच रहे हैं । बड़ी उम्र में माता या पिता को साथी की जरुरत होती है तो मनोवैज्ञानिक समस्याएँ तो होंगी ही हर किसी अकेले खो गए वरिष्ठ नागरिक के पास, लेकिन यह सारी चीजें पुनिर्वावह वाली या विधवा विवाह वाली अब बहुत तेजी से सुधर रही हैं । बहुत तेजी से इनमें सुधार आ रहा है । यद्यपि अभी भी मैं कहती हूँ कि एक भारत में कई भारत रहते हैं । जहाँ बड़े शहरों में बदलाव ज्यादा तेजी से आ रहे हैं वहीं छोटे शहर पुरानी शताब्दी में या पुरानी सदी में ही जी रहे हैं ।

3. आप व्यंग्य लिखते समय किन-किन बातों का ध्यान रखते हो?

उ. क्योंकि व्यंग्य लिखना हर किसी के बस की बात नहीं है । आप ये बिल्कुल ठीक कह रही हैं कि व्यंग्य लिखना हर किसी के बस की बात नहीं होती लेकिन व्यंग्य जिसकी प्रकृति में है, जिसके संस्कारों में है, जिसने बचपन से उस तरह के वीट, ध्यास, परिहास और बड़े ही विनोदी वातावरण में जो

बड़ा हुआ है और जिस व्यक्ति की प्रकृति विनोदी होने के साथ-साथ बहुत संवेदनशील भी है वो जीवन के विद्रुपों को, जीवन की विसंगतियों को पकड़ने का सामर्थ्य रखता है । उसके लिए व्यंग्य लिखना कठिन नहीं है । उसके लिए तो व्यंग्य उसके स्वभाव में शामिल है, उसकी आदतों में शामिल है । तो मुझे व्यंग्य लिखने के लिए जरा भी परिश्रम नहीं करना पड़ता, व्यंग्य मेरे अंदर से स्वतः निकलता है । तभी तो मैं उसे कागज़ों पर उतारती हूँ अन्यथा मैं कोशिश करके सयास व्यंग्य कभी नहीं लिखती । बिल्कुल जब लिखे बिना नहीं रहा जाता तभी मैं व्यंग्य लिखती हूँ ।

4. आपको भारतीय और पाश्चात्य की स्त्रियों में क्या अंतर देखने को मिलता है?

उ. भारतीय और पाश्चात्य की स्त्रियों में ही नहीं, भारतीय और पाश्चात्य पूरी संस्कृति एक-दूसरे से बहुत ही भिन्न है । जो हम कहते हैं ईस्ट इज़ ईस्ट एंड वेस्ट इज़ वेस्ट वो गलत नहीं कहते और कहने को हम कितना भी कह लें कि हम आधुनिक हैं, आधुनिक होने का मतलब अब हम पश्चिमी होना समझते हैं । सारी पश्मिचि सभ्यताओं का आँखे मूँदकर, अंधानुकरण हम कर रहे हैं बल्कि पश्चिम की अच्छी स्तुतियाँ या बहुत अच्छी बातें हैं उन्हें नहीं सीख रहे हैं बल्कि जो गलत चीज़ें हैं, जो चीजें वहाँ भी विफल हो रही हैं, उन्हें हम सीख रहे हैं । यह हमारा सबसे बड़ा दुर्भाग्य है और पश्चिम में हम व्यक्ति सत्ता को बहुत महत्त्व देते हैं । पूर्व में हमारी संस्कृति में हम समूह सत्ता को, सबको साथ लेकर चलने वाले हैं । तो जैसे-जैसे हम आधुनिक होते जा रहे हैं हम ज्यादा से ज्यादा व्यक्ति सत्ता को महत्त्व देते जा रहे हैं । यही हमारा आधुनिकीकरण या पश्चिमीकरण है और इसी से हमें मुक्ति पानी है । हमें विकास, व्यक्ति का विकास, नागरिक का विकास, स्त्री हो या पुरुष हो या बच्चे हों, ये विकास हमें अपनी संस्कृतियों के अनुकूल किया जाना चाहिए था वो नहीं हो पाया। उसके मूल में शिक्षा

का माध्यम अंग्रेजी को मानती हूँ कि जो भाषा हम पढ़ाते हैं वो भाषा अपने साथ ही पूरी संस्कृति ले आती है । एक पूरी आदतें, संस्कार ले आती हैं । मैं ये नहीं कहती कि पश्चिमी संस्कृति गलत या सही है बल्कि दोनों बहुत अलग हैं और कोशिश ये होनी कि हम उस संस्कृति की जो अच्छी बातें हैं उन्हें अपने जीवन में लाएँ और अपनी संस्कृति की जो पुरानी गलत बातें हैं उन्हें हम छोड़ें और दोनों को मिलाकर एक संतुलन स्थापित करें ।

भारतीय और पाश्चात्य स्त्रियों वाली बात में कुछ बातें रह गईं उन्हें मैं जोड़ती हूँ कि मैंने जो वहाँ के परिवारों को, वहाँ के समाज को देखा, जो हम लोग सोचते हैं कि बहुत आधुनिक हो जाने के बाद और आर्थिक रुप से स्वावलंबी होने केबाद स्त्री की सारी समस्याएँ दूर हो जाती हैं, ऐसा नहीं है । पुरुष उत्पीड़न वहाँ भी है और स्त्री वहाँ कहीं ज्यादा अकेली, कहीं ज्यादा असुरक्षित है । मैंने यह देखआ है और वहाँ जरा भी भरोसा, विश्वास एक-दूसरे के लिए नहीं रह गया है । स्त्री-पुरुष में किसी संबंध में जरा भी विश्वास-भरोसा नहीं है । इशी चीज़ को दृष्टव्य करके मैंने अपना नया उपन्यास, जो आजकल लोग बहुत सराह रहे हैं, बड़े मन से पढ़ रहे हैं और भारतीय संस्कृति और पश्चिमि संस्कृति को लेकर, परिवार को लेकर, समाज को लेकर और संस्कृति लेकर मैंने एक बड़े कैनवास पर लिखा है - 'वेणु की डायरी, कौन देश को वासी'। आप उसे पढ़ेंगी तो आपके सामने चीजें बहुत स्पष्ट हो जायेंगी ।

5. समकालीन महिला साहित्यकारों में से आपको किस लेखिका ने अधिक प्रभावित किया है?

उ. समकालीन महिला लेखिकाओं में हम सब समकालीन हैं, हम सब एक-दूसरे की लेखन शैली की, कथ्य की विशेषताओं से भलीभाँति परिचित हैं और मैं तो बहुत-हुत प्रशंसा करती हूँ और प्रशंसक भी हूँ । हर लेखिका की अपनी अलग शैली है । हममें से कोई एक-दूसरे की तरह नहीं लिखता

है । मृदुला जी की बहुत वैचारिक और आधुनिक वैचारिक शक्ति है, चित्रा मुदगल ने स्त्री समस्याओं पर और समाज की समस्याओं पर बहुत ही जो गृहित, पुरानी समस्याएँ हैं उन्हें लेकर बड़ी ही गहराई से कलम चलाई है और बहुत से उपन्यास दिये हैं । मृणाल जी का पहाड़ से लेकर के यहाँ तक जो कुछ उन्होंने लिखा है, उनकी शैली अजब की और बहुत आधुनिक है । मैं उनकी कायल हूँ । सुधा अरोड़ा ने स्त्री केंद्रित जितनी भी रचनाएँ दी हैं वे बिल्कुल हृदय को निचोड़ने वाली हैं और सुधा की शाली भी बड़ी क्रिस्प है और यही चीज मुझे ममता जी में देखने को आती है । ममता कालिया की भी बिलकुल इतनी ज्यादा क्रिस्प शैली है । उनका भाषा शिल्प इतना अनुठा नुक्ते पर रहता है कि उसको एख बार पढ़ने के बाद कोई छोड़ नहीं सकता । इधऱ मालती जोशी हैं उनका तो कहना ही क्या, वो तो इतनी लोकप्रिय हैं और सामान्य पाठकों के बीच मालतीजी को जो लोकप्रियता मिली है उसने अपना एक अलग किर्तीमान स्थापित किया है । मालती जी की कोई कहानी शुरु करने पर हम छोड़ नहीं सकते हैं । उधर चंद्रकांता जी हैं। चंद्रकांता जी के लेखन में बहुत वैविध्य है । उन्होंने कश्मी पर तो बहुत कुछ लिखा ही है । लेकिन कश्मीर के अलावा भी उन्होंने बहुत गहराई से हमारी सामाजिक समस्याओं को लेकर, स्त्री मन को लेकर बहुत लिखा है । कुछ और रह गई नासिरा शर्मा, उनका भी क्या कहना । उनमें बिल्कुल अलग विशेषताएँ हैं। उन्होंने देश तो देश-विदेशों तक ईरान से लेकर अरबी की अरबीक फारसी का इतना गहन अध्ययन है उनका कि उनके लेखन का , उनकी कलम का फैलाव इतना है और जितना फैलाव है उतनी ही गहराई भी है तो नासिरा का लेखन एक बिल्कुल अलग एंगल पर भारतीय जीवन को दर्शाता है और बाहर के जीवन को भी दर्शाता है और हमारे हिंदी लेखन में ऐसा बहुत कम लेखक लेखिकाएँ कर पाये हैं जो कि नासिरा ने किया है । मेरी और भी एक बहुत

प्रिय लेखिका हैं उषा किरन । उन्होंने तो बिहार के जीवन को लेकर, बिहार के माध्यम से समस्त भारतीय जीवन को लेकर और गाँव का जो चित्रण, गाँव का जीवन और अपनी सांस्कृतिक गरिमा को इस तरह उठाया है और उनका 'भामति' उपन्यास जिस तरह उसमें स्त्री गरिमा, स्त्री भव्यता को ऊपर उठाया है उनके लेखन में इतना वैविध्य है गाँव से लेकर, शहर से लेकर, पुराण से लेकर कोई भी उनसे अछुता नहीं रह गया है और जो भी चित्रण हाथ में लेती हैं, गाँव का चित्रण तो वो बिल्कुल आप यह कह सकते हैं कि इससे बेहतर लिखा ही नहीं जा सकता । जितना मार्मिक, जितना मनस्पर्शी है उषा किरण का लेखन, उतना ही वैविध्यपूर्ण भी है ।

एक और लेखिका और बहुत ही महत्त्वपूर्ण लेखिका जिन्होंने भारत के गाँवों को शहर में जो ले आईं और उसको अपने लेखन और उपन्यास का चरित्र बनाया और उनके उपन्यास अपने समय के बहुत ही महत्वपूर्ण साहित हुऐ, मैत्रेयी पुष्पा, वो भी बहुत चर्चित और लोकप्रिय लेखिका हुईं और उनका शब्द शिल्प जो कि उदर कथा, बुंदेली बुंदेलखंड का बेहद लोकप्रिय हुआ । आखिर में मैं बहुत ही महत्त्वपूर्ण नाम ले रही हूँ जिन्हें मैं बहुत पसंद करती हूँ। लेखन तो मैं सभी का पसंद करती हूँ पर कुछ अलग कारणों से, अलग शिल्प के कारण। वो हैं अलका सरावगी। जितनी संवेदना है उतना ही शिल्प हल्का-हल्का सा, एक ट्विस्ट सा है। वो सब चिजें मिलाकर और बहुत अलग-अलग जीवन के कॉर्पोरेट सेंटर से लेकर उन्होंने लिखा है । अलका सरावगी का लेखन बहुत महत्त्वपूर्ण है । बहुत कम उम्र में उन्हें साहित्य अकादमी अवार्ड मिला और वो भी उनके पहले उपन्यास 'कलीकथा' के लिए ।

मैं अपनी तीन बहुत महत्त्वपूर्ण वरिष्ठ महिला कथाकारों, जो हमारे से सिनियर रही हैं मन्नु भंडारी, कृष्णा सोबती और उषा प्रियंवदा जी- इनकी बात करती हूँ । इन्हें मैं महिला लेखन की लेखावली कहा करती हूँ।

ये भीत हैं, ये नींव हैं । इनके ऊपर हमारे महिला लेखन की पूरी इमारत खड़ी हुई है और इनमें मैं सबसे ज्यादा उषाजी और मन्नु जी को मत देती हूँ। मन्नुजी के दोनों उपन्यासों में 'महाभोज' और उस समय महिला लेखन में उपन्यास नहीं आये थे, मेरा 'अग्निपंखी' आया था, पतला-सा और मेरा 'दीक्षांत' आया था। लेकिन मन्नुजी के 'महाभोज' ने और उससे भी ज्यादा मुझे संवेदना के स्तर पर जिसने बहुत प्रभावित किया, संवेदना, कथ्य तीनों स्तर पर प्रभावित करने वाले उपन्यों में मन्नुजी का 'आपका बंटी' था । बहुत लोगों ने मन्नु भंडारी जी का 'यामिनी कथा' पढ़ने के बाद कहा था कि 'यामिनी कथा' 'आपका बंटी' की अगली कड़ी है । उषाजी हमारे समय की बहुत ही महत्वपूर्ण लेखिका हैं । उन्होंने बदलती स्त्री, बदलते समाज का सच्चा चित्रण अपने उपन्यासों और कहानियों में किया है । उषाजी की 'वापसी' कहानी तो एक क्लासिक कालयजी कहानी है । कृष्णा जी ने बहुत ही स्तरीय लिखा है, गहरा लिखा है लेकिन ज्यादातर उनका लेखन उस वजह से नहीं बल्कि बहुत ही साहसी या दुस्साहसी लेखन कहती हूँ । मैं उस दुस्साहसी लेखन से अपनी सहमति नहीं रखती हूँ और टुकड़ों में, अंशों में मुझे कृष्णा सोबती बहुत पसंद हैं लेकिन कृष्णाजी का वो खुलापन मुझे अच्छा नहीं लगता ये मैं मानती हूँ । जैसे हम जीवन में सब कुछ खुलेआम नहीं करते हैं वैसे ही हमें लेखन में भी एक अनुशासन बरतना होता है । वो कैसे बरतें यह किसी लेखक के लिए बहुत बड़ी चुनौती होती है ।

6. क्या आपके परिवार में आपकी साहित्य रचनाओं को लेकर चर्चा होती है?

उ. (हँसते हुए)... जी नहीं, मेरे परिवार में मेरी रचनाओं को लेकर बिल्कुल चर्चा नहीं होती है । वो सब मुझे सिर्फ चिढ़ाते हैं । बच्चे हमारे अब तो बड़े हो गए हैं । हाँ, लेकिन इतना अवश्य है कि मैं जो कुछ भी लिखती हूँ वो

छपने से पहले सबसे पहले उसे मैं अपने पति को सुनाती हूँ । उनके ऊपर ही मेरा इतना विश्वास है कि वो मेरी गलतियाँ भी कुले मन से कह सकते हैं । यदि कहीं अच्छा नहीं बन पड़ा तो मुझे बतायेंगे और मुझे भी जब लिखने के बाद पढ़ते हुए आपको स्वयं अपना पता चल जाता है । लिखने के बाद मैं अपने पति से ही डिस्कस करती हूँ। बच्चे जानते हैं, समझते हैं, पढ़ते हैं और उसको महत्त्व देते हैं । अब तो ज्यादा नहीं पढ़ पाते लेकिन बच्चों का एक स्तर है । रचनाओं को समझने का अगर मैं मेरी रचना कोई हल्की हुई तो मेरे बच्चे कह देते हैं लेकिन चर्चा या डिस्कशन बिल्कुल नहीं होता क्योंकि मेरे घर में मैं लेखिका रहती ही नहीं हूँ बिल्कुल ।

7. आपकी कहानियों में मध्यमवर्गीय परिवार हमेशा केन्द्र में रहा है, क्यों?

उ. मेरी कहानियों में मध्यमवर्गीय परिवार केन्द्र में रहा है, वो तो रहेगा ही, क्योंकि मैं मध्यमवर्गीय परिवार से हूँ लेकिन आप अगर ध्यान से देखें तो मेरी बहुत-सी कहानियों में सामान्य रुप से महिला लेखिकाओं के लिए कहा जाता है अगर आंगन लेख क्या स्त्री की ही समस्याओं से, या स्त्री शोषण से जुड़ा लेखक, ऐसा मेरे लेखन में नहीं है । मध्यम वर्ग है लेकिन मध्यम वर्ग भी बहुत बड़ा है । निम्न मध्यम वर्ग, उच्च मध्यम वर्ग और बीच का मध्यम वर्ग आथे हैं । मैंने बाहरी समस्याओं से बहुत ज्यादा स्त्री के या पुरुष के व्यक्ति के मन की समस्याओं को लिया है । तीसरी ओर सबसे आवश्यक चीज ये है कि मैंने सिर्फ बाहरी समस्याओं का जो अक्स हमारे अंदर पड़ता है उसे लेकर लिखा है । आप बहुत ध्यान से देकेंगी तो जो मेरी बहुत सी कहानियाँ उच्च वर्ग और निम्न वर्ग से जुड़ी हैं और साथ ही वो गाँव से, शहर से, कस्बे से, महानगर से और विदेशों से भी जुड़ी हैं ।

8. बाल साहित्य में आप बच्चों के लिए और क्या नया लिख रही हैं?

उ. बाल साहित्य मैंने चाहा लेकिन मैं लिख नहीं पाई । समय हमारे पास सीमित था और मैंने कहानी, उपन्यास, हास्य व्यंग्य, संस्मरण ये सब कुछ लिखा और अपने सीमित समय और परिवार के समय में लिखा और परिवार को पूरा समय देते हुए बाल साहित्य में मैंने कुछ अधिक लिखा भी नहीं । सारी बाल-रचनाओं को मैंने इकट्ठा करके एक बाल रचना 'झगडा निपटाकर दफतर' आई है बच्चों के लिए जो बाल हास्य उपन्यास टिन्नू की डायरी, छोटी-छोटी कहानियाँ हैं और मैंने बाल साहित्य में कुछ विशेष नहीं लिखा है और न लिखनेवाला हूँ क्योंकि अब समय बहुत सीमित है, स्वास्थ्य समस्याएँ हैं और अब लिखना कठिन होता जा रहा है ।

9. आपके संदर्भ में बलात्कार पीड़ित महिलाओं को लेकर समाज के दृष्टिकोण में क्या बदलाव आया है?

उ. बलात्कार को लेकर इतना अंतर तो आया है कि अब लोग उस दृष्टि से नहीं देखेत हैं जैसे पहले सारा दोष सारा कलंक, सारा आरोप बिचारी लड़की पर मढ़ा जाता था । अब वो नहीं होता है फिर भी जो एक दृष्टिकोण है उसके ऊपर का वो तो रहता ही है और वह बहुत ही दुर्भाग्यपूर्ण होता है । इसलिए दृष्टिकोण जल्दी-जल्दी नहीं बदल सकते हैं । इसमें बहुत समय लगता है पर फिर भी जिस तरह से युवा और लड़कियाँ भी इसको लेने लगी हैं उसे देखकर के थोड़ी आस्वस्ती मिलती है । लेकिन बहुत ज्यादा बदलाव नहीं आया है । बदलाव लाने की जरुरत है ।

10. नई शिक्षा नीति को लेकर आपके क्या विचार हैं?

उ. नई शिक्षा नीति पर मैं अभी बहुत ज्यादा नहीं कह सकती हूँ क्योंकि शिक्षा नीति कैसे इम्प्लाय कर उसे लागू की जाती है उस पर महत्त्व ज्यादा दिया जाता है । जो भी शिक्षा नीति आती है उसमें बहुत निष्पक्ष लोग नहीं रह पाते और नई शिक्षा नीति को मैंने उतने ध्यान से देखा, समझा और

समझने की कोशिश भी नहीं की है । क्योंकि मैं अभी बहुत ज्यादा व्यस्त हो जाती हूँ ।

11. क्या सोशल मीडिया में हिंदी साहित्य का भविष्य सुनहरा है?

उ. देखिए, सोशल मीडिया के माध्यम से भी कब किसी नये कथाकार की बहुत अच्छी चीज आ जाती है कहा नही जा सकता। लेकिन सिर्फ सोशल मीडिया में या ढेर से लोगों तक पहुँचने तक ढेर सी लाइक्स या कमेंट्स मिलने से कोई चीज या साहित्य सुधर सकता ही इसकी दूर-दूर तक कल्पना करना दुष्कर है । साहित्य तो जब गहराई से लिखा जायेगा तो वो चाहे सोशल मीडिया में लिका जाए, जितनी गंभीरता से, एकाग्रता से लिखा जाए, साहित्य सचमुच एक एकांत साधना है। साहित्य आराम से सबके बीच में करने का सरल काम नहीं है ।

12. आपकी आज तक की साहित्यिक यात्रा से आप कहाँ तक संतुष्ट हो?

उ. देखिए, लिखने वाला एक सच का लेखक है वो तो कभी संतुष्ट नहीं होता । उसके पास हमेसा और बेहतर और कुछ और अच्छा, उसका दिमाग जो है, उसका मन मस्तिष्क जो है, हमेशा संवेदनाओं के विचार का वर्कशॉप होता है । वहाँ कुछ-न-कुछ चलता ही है । हाँ, मैंने अब तक जो कुछ लिखा है उसका सबसे बड़ा संतोष मुझे यह है कि मैंने तप में ईमानदारी बरती है और मैंने कभी भी जो बाजार ने माँगा है, जो संपादकों ने माँगा है वो नहीं लिखा है, बल्कि जो मेरे मन ने किया और जो लिखते हुए मैं अच्छा महसूस करती हूँ वही मैंने लिखा है । मैंने कोसइश करके सायास कुछ नहीं लिखा । इसकी मुझे बहुत खुशी है कि कम या ज्यादा जो लिखा है मैंने अपने लेखन के साथ कभी समझौता नहीं किया है ।

13. आज की युवा पीढ़ी को आप क्या संदेश देना चाहते हो?

उ. आज की युवा पीढ़ी बहुत आत्मविश्वस्त है । जीवन की जटिलताओं को खूब गहरे रुप से समझती है । मैं यही कहूँगी फिर से कि लेखक को लेखन से

पहले बहलाने का मत सोचिए। पहले खूब डूबकर लिखिए । जो आपका मन करता है वही लिखें और ये भी मैं कहूँगी कि सबकुछ नहीं लिखने की आवश्यकता है । जीवन में सब कुछ, जीवन में क्या लिखा जाना है, हमें पाठकों की अंजली में क्या देना है उस पर सोचना ज्यादा आवश्यक है ।

14. क्या आपको साहित्यिक सेमिनार और अवार्ड फंक्शन में जाना अच्छा लगता है?

उ. मुझे कहीं भी घर से जाना अच्छा नहीं लगता । जब सब साथ होते हैं तब मुझे जाना अच्छा लगता है । मैं एकांत यात्री नहीं हूँ। मैं अपने बच्चों को अपने घर को बहुत मीस करती हूँ । मेरे लिए दुनिया में सबसे खुबसूरत जगह मेरा घर है तो मुझे ऐसा नहीं है कि अवार्ड फंक्शन में जाना अच्छा नहीं लगता । वहाँ बहुत अपनी बिरादरी के लोग मिलते हैं । जो मैं सोचती हूँ, जो हम विचारते हैं, विचारों का आदान-प्रदान होता है, बहुत अच्छे लोग मिलते हैं। उसके साथ-साथ इन सब सेमिनारों, संगोष्ठियों में कुछ-कुछ थोड़ी बहुत राजनीति, थोड़ा-बहुत प्रपंच, थोड़ा छल हो गया । उड़ी हुई विनम्रता जो मुझे कुछ नहीं अच्छी लगती । मुझे बिल्कुल सहज आत्मीयता अच्छी लगती है जो बहुत दुर्लभ चीज है । लेकिन जहाँ मैं देखती हूँ, मुझे मेरे चाहने वाले हैं, वहाँ मुझे जाना बहुत अच्छा लगता है क्योंकि मैं ये मानती हूँ कि पाठकों का और लेखक का बहुत निःस्वार्थ, बहुत पवित्र रिश्ता होता है । पाठक को कुछ नहीं चाहिए होता है क्योंकि पाठक को लेखक की कलम, लेखक के शब्दों से प्यार होता है । बहुत अनूठा रिश्ता होता है इसलिए मुझे जाना अच्छा लगता है ।

15. आपकी साहित्यिक यात्रा में आपके परिवार का कितना योगदान है?

उ. परिवार ने मेरी साहित्यिक यात्रा में सबसे बड़ा योगदान दिया है कि मुझे खुब-खुब रिलेक्स रखा है । मेरे लिखने को लेकर परिवार ने कभी कुछ नहीं किया। शायद यही बात मैं मानती हूँ। एक निजी श्रेय मैं अपने आप

को भी देती हूँ कि हमने परिवार का समय कभी नहीं चुराया । मैंने पब्लिक टाइम में, पति के टाइम में, बच्चों के टाइम में कभी नहीं लिखा है । उन्हें उनका वाजिब समय दिया है , केयर दी है, उसके बाद ही लिखा है । इसलिए मैंने उतना नहीं लिखा जितने मेरे दूसरे समकालीनों ने लिखा है ।

सप्तम अध्याय

संदर्भ सूची

1. समकालीन हिन्दी कविता, डॉ. रवींद्र भ्रामर, पृ. 9
2. अंग्रेजी हिंदी कोश, डॉ. कामिल बुल्के, पृ. 134
3. द ऑक्सफॉर्ड डिक्शनरी-तृतीय वॉल्यूम, जे.एस. सिम्पसन एण्ड ई.एस. वैन, पृ. 815
4. समकालीन कविता की प्रवृत्तियाँ, डॉ. रामकली सराफ, पृ. 198
5. समकालीन हिन्दी काव्- दशा और दिशा, डॉ. जयप्रकाश शर्मा, पृ. 8
6. दस प्रतिनिधि कहानियाँ, मन्नु भंडारी, किताबघर प्रकाशन, पृ. 6
7. नई सदी की पहचान : श्रेष्ठ महिला कथाकार, ममता कालिया, पृ. 7

साक्षात्कार (सोशल मिडिया माध्यम)

1. 'यामिनी कथा' लिखने की प्रेरणा आपको कहाँ से मिली?

उ. प्रेरणा ऐसे ही अनायास मिल जाया करती है लेकिन 'यामिनी कथा' की प्रेरणा मुझे बिल्कुल बाकायदा प्रत्यक्ष मिली । मेरे पति के एक मित्र थे जिनकी कैंसर से मृत्यु हो चुकी थी तो हम एक बार उनके घर गए थे और जब तक वो धीरे-धीरे कैंसर से गुजरते रहे हमें बड़ा दुःख होता रहा, लेकिन बाद में हमने देखा कि उनकी पत्नी ने दूसरा विवाह किया, दूसरा विवाह किया तो उनका बेटा करीब दस या बारह साल का रहा होगा । एक बार मुझे याद है कि उनके घर गए थे और उन्होंने दूसरा विवाह भी कर लिया था लेकिन तब तक उस समय मेरे बच्चे और उनके बच्चे समकक्ष थे, हमउम्र थे और वो टेरेस पर खेल रहे थे । नीचे आने पर मेरे बड़े बच्चे ने बताया कि उनके बच्चे ने, जिसका नाम संजय था, उसने जाने किस बात पर खेल-खेल में एक बड़ी-सी काँच की ड्रींक की बॉटल तोड़ दी और ऐसे तोड़कर उसने मज़ा किया था। मैं बिल्कुल काँप गई कि काँच की बॉटल किसी दस-ग्यारह साल के बच्चे के द्वारा यूँ ही तोड़ दिया जाना.. उसके अंदर क्या होगा? क्या चल रहा होगा.. शायद सही सारी मनःस्थितियाँ थीं जिसने मुझे उसकी माँ की मनःस्थितियों की तरफ मोड़ दिया और बाद में देखा तो उसकी माँ को एक छोटा बच्चा भी हुआ था तो बराबर मन इसी में घुमड़ता रहा । यूँही यह सोचकर नहीं कि मुझे इस पर उपन्यास लिखना है, मन में एक बेचैयानी थी कि कैसा होगा उस स्त्री का जीवन, जिसके पास पहले पति का एक बड़ा बेटा हो और दूसरे पति से एक छोटा बच्चा हो और क्या संबंध होंगे उसके नये पति, पहले पति के बेटे और इस किशोर हो रहे बेटे से और उसके नये पैदा हुए भाई से और

कितनी तरह की भूमिकाएँ उसे निभानी पड़ती होंगी । बस ये मन में घुमता रहा और 'यामिनी कथा' लिख दी ।

2. विधवा विवाह एवं पुनर्विवाह के संदर्भ में आज आप समाज में क्या परिवर्तन देखते हैं?

उ. विधवा विवाह और पुनर्विवाह के लिए आज हमारे समाज में जो स्थितियाँ थीं उनमें ज़मीन आसमान का अंतर आ गया है । सबसे बड़ी बात ये कि हमारे समय में विधवायें दूर से ही पहचान में आ जाती थीं । सफ़ेद साड़ी, सुनी माँग, सुना माथा, सुनी कलाईयाँ देखकर भयानक-भयावह सी लगती थीं । उन्हें जो ईस्वर ने कष्ट दिया होता था लेकिन हम संसार वाले, परिवार वाले भी उन्हें सारे जो कुछ सुख दे शकते थे, उससे भी उन्हें विहीन कर देते थे । आज कहीं हमें समाज में ये पता भी नहीं चलेगा कि कौन विधवा है, कौन नहीं है और उसके बाद अब बड़ी तेजी से बड़े शहरों में विधवा विवाह भी लोग कर रहे हैं और जैसे बड़ी उम्र के वरिष्ठ नागरिकों में उनके बच्चे उनके विवाह के लिए सोच रहे हैं । बड़ी उम्र में माता या पिता को साथी की जरुरत होती है तो मनोवैज्ञानिक समस्याएँ तो होंगी ही हर किसी अकेले खो गए वरिष्ठ नागरिक के पास, लेकिन यह सारी चीजें पुनिर्वावह वाली या विधवा विवाह वाली अब बहुत तेजी से सुधर रही हैं । बहुत तेजी से इनमें सुधार आ रहा है । यद्यपि अभी भी मैं कहती हूँ कि एक भारत में कई भारत रहते हैं । जहाँ बड़े शहरों में बदलाव ज्यादा तेजी से आ रहे हैं वहीं छोटे शहर पुरानी शताब्दी में या पुरानी सदी में ही जी रहे हैं ।

3. आप व्यंग्य लिखते समय किन-किन बातों का ध्यान रखते हो?

उ. क्योंकि व्यंग्य लिखना हर किसी के बस की बात नहीं है । आप ये बिल्कुल ठीक कह रही हैं कि व्यंग्य लिखना हर किसी के बस की बात नहीं होती लेकिन व्यंग्य जिसकी प्रकृति में है, जिसके संस्कारों में है, जिसने बचपन से उस तरह के वीट, ध्यास, परिहास और बड़े ही विनोदी वातावरण में जो

बड़ा हुआ है और जिस व्यक्ति की प्रकृति विनोदी होने के साथ-साथ बहुत संवेदनशील भी है वो जीवन के विद्रुपों को, जीवन की विसंगतियों को पकड़ने का सामर्थ्य रखता है । उसके लिए व्यंग्य लिखना कठिन नहीं है । उसके लिए तो व्यंग्य उसके स्वभाव में शामिल है, उसकी आदतों में शामिल है । तो मुझे व्यंग्य लिखने के लिए जरा भी परिश्रम नहीं करना पड़ता, व्यंग्य मेरे अंदर से स्वतः निकलता है । तभी तो मैं उसे कागज़ों पर उतारती हूँ अन्यथा मैं कोशिश करके सयास व्यंग्य कभी नहीं लिखती । बिल्कुल जब लिखे बिना नहीं रहा जाता तभी मैं व्यंग्य लिखती हूँ ।

4. आपको भारतीय और पाश्चात्य की स्त्रियों में क्या अंतर देखने को मिलता है?

उ. भारतीय और पाश्चात्य की स्त्रियों में ही नहीं, भारतीय और पाश्चात्य पूरी संस्कृति एक-दूसरे से बहुत ही भिन्न है । जो हम कहते हैं ईस्ट इज़ ईस्ट एंड वेस्ट इज़ वेस्ट वो गलत नहीं कहते और कहने को हम कितना भी कह लें कि हम आधुनिक हैं, आधुनिक होने का मतलब अब हम पश्चिमी होना समझते हैं । सारी पश्मिचि सभ्यताओं का आँखे मूँदकर, अंधानुकरण हम कर रहे हैं बल्कि पश्चिम की अच्छी स्तुतियाँ या बहुत अच्छी बातें हैं उन्हें नहीं सीख रहे हैं बल्कि जो गलत चीज़ें हैं, जो चीजें वहाँ भी विफल हो रही हैं, उन्हें हम सीख रहे हैं । यह हमारा सबसे बड़ा दुर्भाग्य है और पश्चिम में हम व्यक्ति सत्ता को बहुत महत्त्व देते हैं । पूर्व में हमारी संस्कृति में हम समूह सत्ता को, सबको साथ लेकर चलने वाले हैं । तो जैसे-जैसे हम आधुनिक होते जा रहे हैं हम ज्यादा से ज्यादा व्यक्ति सत्ता को महत्त्व देते जा रहे हैं । यही हमारा आधुनिकीकरण या पश्चिमीकरण है और इसी से हमें मुक्ति पानी है । हमें विकास, व्यक्ति का विकास, नागरिक का विकास, स्त्री हो या पुरुष हो या बच्चे हों, ये विकास हमें अपनी संस्कृतियों के अनुकूल किया जाना चाहिए था वो नहीं हो पाया। उसके मूल में शिक्षा

का माध्यम अंग्रेजी को मानती हूँ कि जो भाषा हम पढ़ाते हैं वो भाषा अपने साथ ही पूरी संस्कृति ले आती है । एक पूरी आदतें, संस्कार ले आती हैं । मैं ये नहीं कहती कि पश्चिमी संस्कृति गलत या सही है बल्कि दोनों बहुत अलग हैं और कोशिश ये होनी कि हम उस संस्कृति की जो अच्छी बातें हैं उन्हें अपने जीवन में लाएँ और अपनी संस्कृति की जो पुरानी गलत बातें हैं उन्हें हम छोड़ें और दोनों को मिलाकर एक संतुलन स्थापित करें ।

भारतीय और पाश्चात्य स्त्रियों वाली बात में कुछ बातें रह गईं उन्हें मैं जोड़ती हूँ कि मैंने जो वहाँ के परिवारों को, वहाँ के समाज को देखा, जो हम लोग सोचते हैं कि बहुत आधुनिक हो जाने के बाद और आर्थिक रुप से स्वावलंबी होने केबाद स्त्री की सारी समस्याएँ दूर हो जाती हैं, ऐसा नहीं है । पुरुष उत्पीड़न वहाँ भी है और स्त्री वहाँ कहीं ज्यादा अकेली, कहीं ज्यादा असुरक्षित है । मैंने यह देखआ है और वहाँ जरा भी भरोसा, विश्वास एक-दूसरे के लिए नहीं रह गया है । स्त्री-पुरुष में किसी संबंध में जरा भी विश्वास-भरोसा नहीं है । इशी चीज़ को दृष्टव्य करके मैंने अपना नया उपन्यास, जो आजकल लोग बहुत सराह रहे हैं, बड़े मन से पढ़ रहे हैं और भारतीय संस्कृति और पश्चिमि संस्कृति को लेकर, परिवार को लेकर, समाज को लेकर और संस्कृति लेकर मैंने एक बड़े कैनवास पर लिखा है - 'वेणु की डायरी, कौन देश को वासी'। आप उसे पढ़ेंगी तो आपके सामने चीजें बहुत स्पष्ट हो जायेंगी ।

5. समकालीन महिला साहित्यकारों में से आपको किस लेखिका ने अधिक प्रभावित किया है?

उ. समकालीन महिला लेखिकाओं में हम सब समकालीन हैं, हम सब एक-दूसरे की लेखन शैली की, कथ्य की विशेषताओं से भलीभाँति परिचित हैं और मैं तो बहुत-हुत प्रशंसा करती हूँ और प्रशंसक भी हूँ । हर लेखिका की अपनी अलग शैली है । हममें से कोई एक-दूसरे की तरह नहीं लिखता

है । मृदुला जी की बहुत वैचारिक और आधुनिक वैचारिक शक्ति है, चित्रा मुदगल ने स्त्री समस्याओं पर और समाज की समस्याओं पर बहुत ही जो गृहित, पुरानी समस्याएँ हैं उन्हें लेकर बड़ी ही गहराई से कलम चलाई है और बहुत से उपन्यास दिये हैं । मृणाल जी का पहाड़ से लेकर के यहाँ तक जो कुछ उन्होंने लिखा है, उनकी शैली अजब की और बहुत आधुनिक है । मैं उनकी कायल हूँ । सुधा अरोड़ा ने स्त्री केंद्रित जितनी भी रचनाएँ दी हैं वे बिल्कुल हृदय को निचोड़ने वाली हैं और सुधा की शाली भी बड़ी क्रिस्प है और यही चीज मुझे ममता जी में देखने को आती है । ममता कालिया की भी बिलकुल इतनी ज्यादा क्रिस्प शैली है । उनका भाषा शिल्प इतना अनुठा नुक्ते पर रहता है कि उसको एख बार पढ़ने के बाद कोई छोड़ नहीं सकता । इधऱ मालती जोशी हैं उनका तो कहना ही क्या, वो तो इतनी लोकप्रिय हैं और सामान्य पाठकों के बीच मालतीजी को जो लोकप्रियता मिली है उसने अपना एक अलग किर्तीमान स्थापित किया है । मालती जी की कोई कहानी शुरु करने पर हम छोड़ नहीं सकते हैं । उधर चंद्रकांता जी हैं। चंद्रकांता जी के लेखन में बहुत वैविध्य है । उन्होंने कश्मी पर तो बहुत कुछ लिखा ही है । लेकिन कश्मीर के अलावा भी उन्होंने बहुत गहराई से हमारी सामाजिक समस्याओं को लेकर, स्त्री मन को लेकर बहुत लिखा है । कुछ और रह गई नासिरा शर्मा, उनका भी क्या कहना । उनमें बिल्कुल अलग विशेषताएँ हैं। उन्होंने देश तो देश-विदेशों तक ईरान से लेकर अरबी की अरबीक फारसी का इतना गहन अध्ययन है उनका कि उनके लेखन का , उनकी कलम का फैलाव इतना है और जितना फैलाव है उतनी ही गहराई भी है तो नासिरा का लेखन एक बिल्कुल अलग एंगल पर भारतीय जीवन को दर्शाता है और बाहर के जीवन को भी दर्शाता है और हमारे हिंदी लेखन में ऐसा बहुत कम लेखक लेखिकाएँ कर पाये हैं जो कि नासिरा ने किया है । मेरी और भी एक बहुत

प्रिय लेखिका हैं उषा किरन । उन्होंने तो बिहार के जीवन को लेकर, बिहार के माध्यम से समस्त भारतीय जीवन को लेकर और गाँव का जो चित्रण, गाँव का जीवन और अपनी सांस्कृतिक गरिमा को इस तरह उठाया है और उनका 'भामति' उपन्यास जिस तरह उसमें स्त्री गरिमा, स्त्री भव्यता को ऊपर उठाया है उनके लेखन में इतना वैविध्य है गाँव से लेकर, शहर से लेकर, पुराण से लेकर कोई भी उनसे अछुता नहीं रह गया है और जो भी चित्रण हाथ में लेती हैं, गाँव का चित्रण तो वो बिल्कुल आप यह कह सकते हैं कि इससे बेहतर लिखा ही नहीं जा सकता । जितना मार्मिक, जितना मनस्पर्शी है उषा किरण का लेखन, उतना ही वैविध्यपूर्ण भी है ।

एक और लेखिका और बहुत ही महत्त्वपूर्ण लेखिका जिन्होंने भारत के गाँवों को शहर में जो ले आईं और उसको अपने लेखन और उपन्यास का चरित्र बनाया और उनके उपन्यास अपने समय के बहुत ही महत्वपूर्ण साहित हुऐ, मैत्रेयी पुष्पा, वो भी बहुत चर्चित और लोकप्रिय लेखिका हुईं और उनका शब्द शिल्प जो कि उदर कथा, बुंदेली बुंदेलखंड का बेहद लोकप्रिय हुआ । आखिर में मैं बहुत ही महत्त्वपूर्ण नाम ले रही हूँ जिन्हें मैं बहुत पसंद करती हूँ। लेखन तो मैं सभी का पसंद करती हूँ पर कुछ अलग कारणों से, अलग शिल्प के कारण। वो हैं अलका सरावगी। जितनी संवेदना है उतना ही शिल्प हल्का-हल्का सा, एक ट्विस्ट सा है। वो सब चिजें मिलाकर और बहुत अलग-अलग जीवन के कॉर्पोरेट सेंटर से लेकर उन्होंने लिखा है । अलका सरावगी का लेखन बहुत महत्त्वपूर्ण है । बहुत कम उम्र में उन्हें साहित्य अकादमी अवार्ड मिला और वो भी उनके पहले उपन्यास 'कलीकथा' के लिए ।

मैं अपनी तीन बहुत महत्त्वपूर्ण वरिष्ठ महिला कथाकारों, जो हमारे से सिनियर रही हैं मन्नु भंडारी, कृष्णा सोबती और उषा प्रियंवदा जी- इनकी बात करती हूँ । इन्हें मैं महिला लेखन की लेखावली कहा करती हूँ।

ये भीत हैं, ये नींव हैं । इनके ऊपर हमारे महिला लेखन की पूरी इमारत खड़ी हुई है और इनमें मैं सबसे ज्यादा उषाजी और मन्नु जी को मत देती हूँ। मन्नुजी के दोनों उपन्यासों में 'महाभोज' और उस समय महिला लेखन में उपन्यास नहीं आये थे, मेरा 'अग्निपंखी' आया था, पतला-सा और मेरा 'दीक्षांत' आया था। लेकिन मन्नुजी के 'महाभोज' ने और उससे भी ज्यादा मुझे संवेदना के स्तर पर जिसने बहुत प्रभावित किया, संवेदना, कथ्य तीनों स्तर पर प्रभावित करने वाले उपन्यों में मन्नुजी का 'आपका बंटी' था । बहुत लोगों ने मन्नु भंडारी जी का 'यामिनी कथा' पढ़ने के बाद कहा था कि 'यामिनी कथा' 'आपका बंटी' की अगली कड़ी है । उषाजी हमारे समय की बहुत ही महत्वपूर्ण लेखिका हैं । उन्होंने बदलती स्त्री, बदलते समाज का सच्चा चित्रण अपने उपन्यासों और कहानियों में किया है । उषाजी की 'वापसी' कहानी तो एक क्लासिक कालयजी कहानी है । कृष्णा जी ने बहुत ही स्तरीय लिखा है, गहरा लिखा है लेकिन ज्यादातर उनका लेखन उस वजह से नहीं बल्कि बहुत ही साहसी या दुस्साहसी लेखन कहती हूँ । मैं उस दुस्साहसी लेखन से अपनी सहमति नहीं रखती हूँ और टुकड़ों में, अंशों में मुझे कृष्णा सोबती बहुत पसंद हैं लेकिन कृष्णाजी का वो खुलापन मुझे अच्छा नहीं लगता ये मैं मानती हूँ । जैसे हम जीवन में सब कुछ खुलेआम नहीं करते हैं वैसे ही हमें लेखन में भी एक अनुशासन बरतना होता है । वो कैसे बरतें यह किसी लेखक के लिए बहुत बड़ी चुनौती होती है ।

6. क्या आपके परिवार में आपकी साहित्य रचनाओं को लेकर चर्चा होती है?

उ. (हँसते हुए)... जी नहीं, मेरे परिवार में मेरी रचनाओं को लेकर बिल्कुल चर्चा नहीं होती है । वो सब मुझे सिर्फ चिढ़ाते हैं । बच्चे हमारे अब तो बड़े हो गए हैं । हाँ, लेकिन इतना अवश्य है कि मैं जो कुछ भी लिखती हूँ वो

छपने से पहले सबसे पहले उसे मैं अपने पति को सुनाती हूँ । उनके ऊपर ही मेरा इतना विश्वास है कि वो मेरी गलतियाँ भी कुले मन से कह सकते हैं । यदि कहीं अच्छा नहीं बन पड़ा तो मुझे बतायेंगे और मुझे भी जब लिखने के बाद पढ़ते हुए आपको स्वयं अपना पता चल जाता है । लिखने के बाद मैं अपने पति से ही डिस्कस करती हूँ। बच्चे जानते हैं, समझते हैं, पढ़ते हैं और उसको महत्त्व देते हैं । अब तो ज्यादा नहीं पढ़ पाते लेकिन बच्चों का एक स्तर है । रचनाओं को समझने का अगर मैं मेरी रचना कोई हल्की हुई तो मेरे बच्चे कह देते हैं लेकिन चर्चा या डिस्कशन बिल्कुल नहीं होता क्योंकि मेरे घर में मैं लेखिका रहती ही नहीं हूँ बिल्कुल ।

7. आपकी कहानियों में मध्यमवर्गीय परिवार हमेशा केन्द्र में रहा है, क्यों?

उ. मेरी कहानियों में मध्यमवर्गीय परिवार केन्द्र में रहा है, वो तो रहेगा ही, क्योंकि मैं मध्यमवर्गीय परिवार से हूँ लेकिन आप अगर ध्यान से देखें तो मेरी बहुत-सी कहानियों में सामान्य रुप से महिला लेखिकाओं के लिए कहा जाता है अगर आंगन लेख क्या स्त्री की ही समस्याओं से, या स्त्री शोषण से जुड़ा लेखक, ऐसा मेरे लेखन में नहीं है । मध्यम वर्ग है लेकिन मध्यम वर्ग भी बहुत बड़ा है । निम्न मध्यम वर्ग, उच्च मध्यम वर्ग और बीच का मध्यम वर्ग आथे हैं । मैंने बाहरी समस्याओं से बहुत ज्यादा स्त्री के या पुरुष के व्यक्ति के मन की समस्याओं को लिया है । तीसरी ओर सबसे आवश्यक चीज ये है कि मैंने सिर्फ बाहरी समस्याओं का जो अक्स हमारे अंदर पड़ता है उसे लेकर लिखा है । आप बहुत ध्यान से देकेंगी तो जो मेरी बहुत सी कहानियाँ उच्च वर्ग और निम्न वर्ग से जुड़ी हैं और साथ ही वो गाँव से, शहर से, कस्बे से, महानगर से और विदेशों से भी जुड़ी हैं ।

8. बाल साहित्य में आप बच्चों के लिए और क्या नया लिख रही हैं?

उ. बाल साहित्य मैंने चाहा लेकिन मैं लिख नहीं पाई । समय हमारे पास सीमित था और मैंने कहानी, उपन्यास, हास्य व्यंग्य, संस्मरण ये सब कुछ लिखा और अपने सीमित समय और परिवार के समय में लिखा और परिवार को पूरा समय देते हुए बाल साहित्य में मैंने कुछ अधिक लिखा भी नहीं । सारी बाल-रचनाओं को मैंने इकट्ठा करके एक बाल रचना 'झगडा निपटाकर दफतर' आई है बच्चों के लिए जो बाल हास्य उपन्यास टिन्नू की डायरी, छोटी-छोटी कहानियाँ हैं और मैंने बाल साहित्य में कुछ विशेष नहीं लिखा है और न लिखनेवाला हूँ क्योंकि अब समय बहुत सीमित है, स्वास्थ्य समस्याएँ हैं और अब लिखना कठिन होता जा रहा है ।

9. आपके संदर्भ में बलात्कार पीड़ित महिलाओं को लेकर समाज के दृष्टिकोण में क्या बदलाव आया है?

उ. बलात्कार को लेकर इतना अंतर तो आया है कि अब लोग उस दृष्टि से नहीं देखेत हैं जैसे पहले सारा दोष सारा कलंक, सारा आरोप बिचारी लड़की पर मढ़ा जाता था । अब वो नहीं होता है फिर भी जो एक दृष्टिकोण है उसके ऊपर का वो तो रहता ही है और वह बहुत ही दुर्भाग्यपूर्ण होता है । इसलिए दृष्टिकोण जल्दी-जल्दी नहीं बदल सकते हैं । इसमें बहुत समय लगता है पर फिर भी जिस तरह से युवा और लड़कियाँ भी इसको लेने लगी हैं उसे देखकर के थोड़ी आस्वस्ती मिलती है । लेकिन बहुत ज्यादा बदलाव नहीं आया है । बदलाव लाने की जरुरत है ।

10. नई शिक्षा नीति को लेकर आपके क्या विचार हैं?

उ. नई शिक्षा नीति पर मैं अभी बहुत ज्यादा नहीं कह सकती हूँ क्योंकि शिक्षा नीति कैसे इम्प्लाय कर उसे लागू की जाती है उस पर महत्त्व ज्यादा दिया जाता है । जो भी शिक्षा नीति आती है उसमें बहुत निष्पक्ष लोग नहीं रह पाते और नई शिक्षा नीति को मैंने उतने ध्यान से देखा, समझा और

समझने की कोशिश भी नहीं की है । क्योंकि मैं अभी बहुत ज्यादा व्यस्त हो जाती हूँ ।

11. क्या सोशल मीडिया में हिंदी साहित्य का भविष्य सुनहरा है?

उ. देखिए, सोशल मीडिया के माध्यम से भी कब किसी नये कथाकार की बहुत अच्छी चीज आ जाती है कहा नही जा सकता। लेकिन सिर्फ सोशल मीडिया में या ढेर से लोगों तक पहुँचने तक ढेर सी लाइक्स या कमेंट्स मिलने से कोई चीज या साहित्य सुधर सकता ही इसकी दूर-दूर तक कल्पना करना दुष्कर है । साहित्य तो जब गहराई से लिखा जायेगा तो वो चाहे सोशल मीडिया में लिका जाए, जितनी गंभीरता से, एकाग्रता से लिखा जाए, साहित्य सचमुच एक एकांत साधना है। साहित्य आराम से सबके बीच में करने का सरल काम नहीं है ।

12. आपकी आज तक की साहित्यिक यात्रा से आप कहाँ तक संतुष्ट हो?

उ. देखिए, लिखने वाला एक सच का लेखक है वो तो कभी संतुष्ट नहीं होता । उसके पास हमेसा और बेहतर और कुछ और अच्छा, उसका दिमाग जो है, उसका मन मस्तिष्क जो है, हमेशा संवेदनाओं के विचार का वर्कशॉप होता है । वहाँ कुछ-न-कुछ चलता ही है । हाँ, मैंने अब तक जो कुछ लिखा है उसका सबसे बड़ा संतोष मुझे यह है कि मैंने तप में ईमानदारी बरती है और मैंने कभी भी जो बाजार ने माँगा है, जो संपादकों ने माँगा है वो नहीं लिखा है, बल्कि जो मेरे मन ने किया और जो लिखते हुए मैं अच्छा महसूस करती हूँ वही मैंने लिखा है । मैंने कोसइश करके सायास कुछ नहीं लिखा । इसकी मुझे बहुत खुशी है कि कम या ज्यादा जो लिखा है मैंने अपने लेखन के साथ कभी समझौता नहीं किया है ।

13. आज की युवा पीढ़ी को आप क्या संदेश देना चाहते हो?

उ. आज की युवा पीढ़ी बहुत आत्मविश्वस्त है । जीवन की जटिलताओं को खूब गहरे रुप से समझती है । मैं यही कहूँगी फिर से कि लेखक को लेखन से

पहले बहलाने का मत सोचिए। पहले खूब डूबकर लिखिए । जो आपका मन करता है वही लिखें और ये भी मैं कहूँगी कि सबकुछ नहीं लिखने की आवश्यकता है । जीवन में सब कुछ, जीवन में क्या लिखा जाना है, हमें पाठकों की अंजली में क्या देना है उस पर सोचना ज्यादा आवश्यक है ।

14. क्या आपको साहित्यिक सेमिनार और अवार्ड फंक्शन में जाना अच्छा लगता है?

उ. मुझे कहीं भी घर से जाना अच्छा नहीं लगता । जब सब साथ होते हैं तब मुझे जाना अच्छा लगता है । मैं एकांत यात्री नहीं हूँ। मैं अपने बच्चों को अपने घर को बहुत मीस करती हूँ । मेरे लिए दुनिया में सबसे खुबसूरत जगह मेरा घर है तो मुझे ऐसा नहीं है कि अवार्ड फंक्शन में जाना अच्छा नहीं लगता । वहाँ बहुत अपनी बिरादरी के लोग मिलते हैं । जो मैं सोचती हूँ, जो हम विचारते हैं, विचारों का आदान-प्रदान होता है, बहुत अच्छे लोग मिलते हैं। उसके साथ-साथ इन सब सेमिनारों, संगोष्ठियों में कुछ-कुछ थोड़ी बहुत राजनीति, थोड़ा-बहुत प्रपंच, थोड़ा छल हो गया । उड़ी हुई विनम्रता जो मुझे कुछ नहीं अच्छी लगती । मुझे बिल्कुल सहज आत्मीयता अच्छी लगती है जो बहुत दुर्लभ चीज है । लेकिन जहाँ मैं देखती हूँ, मुझे मेरे चाहने वाले हैं, वहाँ मुझे जाना बहुत अच्छा लगता है क्योंकि मैं ये मानती हूँ कि पाठकों का और लेखक का बहुत निःस्वार्थ, बहुत पवित्र रिश्ता होता है । पाठक को कुछ नहीं चाहिए होता है क्योंकि पाठक को लेखक की कलम, लेखक के शब्दों से प्यार होता है । बहुत अनूठा रिश्ता होता है इसलिए मुझे जाना अच्छा लगता है ।

15. आपकी साहित्यिक यात्रा में आपके परिवार का कितना योगदान है?

उ. परिवार ने मेरी साहित्यिक यात्रा में सबसे बड़ा योगदान दिया है कि मुझे खुब-खुब रिलेक्स रखा है । मेरे लिखने को लेकर परिवार ने कभी कुछ नहीं किया। शायद यही बात मैं मानती हूँ। एक निजी श्रेय मैं अपने आप

को भी देती हूँ कि हमने परिवार का समय कभी नहीं चुराया । मैंने पब्लिक टाइम में, पति के टाइम में, बच्चों के टाइम में कभी नहीं लिखा है । उन्हें उनका वाजिब समय दिया है , केयर दी है, उसके बाद ही लिखा है । इसलिए मैंने उतना नहीं लिखा जितने मेरे दूसरे समकालीनों ने लिखा है ।

सप्तम अध्याय

संदर्भ सूची

1. समकालीन हिन्दी कविता, डॉ. रवींद्र भ्रामर, पृ. 9
2. अंग्रेजी हिंदी कोश, डॉ. कामिल बुल्के, पृ. 134
3. द ऑक्सफॉर्ड डिक्शनरी-तृतीय वॉल्यूम, जे.एस. सिम्पसन एण्ड ई.एस. वैन, पृ. 815
4. समकालीन कविता की प्रवृत्तियाँ, डॉ. रामकली सराफ, पृ. 198
5. समकालीन हिन्दी काव्- दशा और दिशा, डॉ. जयप्रकाश शर्मा, पृ. 8
6. दस प्रतिनिधि कहानियाँ, मन्नु भंडारी, किताबघर प्रकाशन, पृ. 6
7. नई सदी की पहचान : श्रेष्ठ महिला कथाकार, ममता कालिया, पृ. 7